A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 20 सितंबर, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 25 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

दुनिया मेरे आगे

फोटो-गिरीश शर्मा

सुप्रभात

गिल्ली को दूर तक डंडे से मारकर पहुंचाना
गेंद को सरपट सबसे तेज़ फेंकना
कुश्ती में अपने ख़ास दांव से पटखनी देना
पढ़ाई में अव्वल रहना
जग जीत लेने का स्वप्न देखना

दम तोड़ देती है हर होड़
रीत जाते हैं अधिकतर स्वप्न
उम्र बीतते
बिसर जाते हैं कीर्तिमान
अरुचिकर लगती हैं उपाधियां

रह जाती है उतनी ही आस
जीवन से
जितनी राह चलते
पथिक की प्यास
क्षीण हो जाती है सहजता
मन पर भार उठाते
सूखने लगता है रस स्पर्धाओं में

जब कुछ पा लेने की डोर
ढीली पड़ती है
जीवन अपनी पेंग बढ़ाता है।

-कौशलेंद्र सिंह

प्रधानमंत्री मोदी आज रीवा के हवाई अड्डे का करेंगे शुभारंभ

रीवा अंचल में पर्यटन के साथ निवेश को भी मिलेगा बढ़ावा: मुख्यमंत्री डॉ. यादव

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने देश के साथ मध्यप्रदेश को भी अनेक अनूठी सौगातें दी है, जिससे मध्यप्रदेश तेजी से विकसित राज्य की ओर अग्रसर हो रहा है। विकास की इसी

● विंध्य क्षेत्र के लिये गेम चेंजर साबित होगा रीवा एयरपोर्ट

कड़ी प्रधानमंत्री श्री मोदी विंध्य क्षेत्र को एयरपोर्ट की सौगात देने जा रहे हैं। रविवार 20 अक्टूबर विंध्य क्षेत्र के लिये ऐतिहासिक होगा। इस दिन प्रधानमंत्री श्री मोदी रीवा एयरपोर्ट का वर्चुअल शुभारंभ करेंगे। रीवा एयरपोर्ट पूरे विंध्य क्षेत्र के लिये गेम चेंजर साबित होगा, इससे रीवा अंचल में पर्यटन के साथ निवेश को भी बढ़ावा मिलेगा।

प्रदेश का 6वां एयरपोर्ट, जिसे डीजीसीए ने दिया लायसेंस

मध्यप्रदेश के एक बड़े हिस्से के लिए यह अच्छी खबर है कि डायरेक्टोरेट जनरल ऑफ सिविल एविएशन (डीजीसीए) ने रीवा एयरपोर्ट को लाइसेंस दे दिया है। इसके अंतर्गत अब यहां से एयरक्राफ्ट आसानी से उड़ान भर सकेंगे। भोपाल, जबलपुर, खजराहो, इंदौर और ग्वालियर के बाद रीवा प्रदेश का 6वां एयरपोर्ट है, जिसे डीजीसीए ने लाइसेंस दिया है। इस एयरपोर्ट पर उड़ानें शुरू होने से प्रदेश के 65 लाख से ज्यादा लोगों को फायदा होगा। साथ ही रीवा की सीमा से लगे उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ के लोगों को भी राहत मिलेगी।

उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे क्षेत्र भी होंगे लाभान्वित

उल्लेखनीय है कि रीवा से मऊगंज, सीधी, सतना, मैहर जिले सीधे जुड़े हुए हैं। इन जिलों के साथ ही उत्तर प्रदेश और छत्तीसगढ़ की सीमा से लगे लोग भी काम के सिलसिले में रीवा आते हैं। रीवा की आबादी करीब 15 लाख, मऊगंज की 8 लाख, सीधी की 12 लाख, सिंगरौली की 12 लाख और सतना जिले की आबादी 18 लाख है। इन जिलों की जनता को रीवा एयरपोर्ट बनने से सीधा फायदा होगा। एयर कनेक्टिविटी होने से यहां विकास को भी रफ्तार मिलेगी। रीवा एयरपोर्ट सरकार की उड़ान (उड़े देश का आम नागरिक-UDAN) योजना के तहत बनाया गया है। इसका उद्देश्य विमान यात्रा को आम जनता के लिए आसान बनाना है। इससे छोटे शहरों के बीच एयर कनेक्टिविटी बेहतर होगी. इसके अलावा अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी।

हिंसा के बाद बुलडोजर ऐक्शन की हो गई तैयारी

बहराइच के 23 घरों पर रातोंरात चिपकाया अतिक्रमण का नोटिस

सीएम योगी को एसटीएफ चीफ ने बताए क्षेत्र के हालात

बहराइच (एजेंसी)। बहराइच हिंसा का शनिवार को 7वां दिन है। सड़कों पर अभी भी सन्नाटा है। जगह-जगह फोर्स तैनात है। हालांकि, अब प्रशासन एक्शन में जुट गया। राम गोपाल की हत्या में मुख्य आरोपी अब्दुल हमीद के घर पर बुलडोजर चल सकता है। इसी घर में भगवा झंडा लहराने के दौरान राम गोपाल को गोली मारी गई थी। शुक्रवार रात को पीडब्ल्यूडी की ओर से महाराजगंज में 23 मकानों पर नोटिस चस्पा किए गए हैं। इनमें 20 मुस्लिम और 3 हिंदुओं के मकान हैं। प्रशासन ने 3 दिन का वक्त दिया है। नोटिस का जवाब न मिलने पर बुलडोजर कार्रवाई हो सकती है। यह वही जगह है जहां से मूर्ति विसर्जन के दौरान हिंसा की शुरुआत हुई थी। हालांकि, पीडब्ल्यूडी ने एक बयान जारी कहा- महाराजगंज में पहले भी अतिक्रमण हटाया गया था। दोबारा रोड किनारे अतिक्रमण हो गया। इसे हटाया जाएगा। जिन 23 घरों में नोटिस चस्पा किए गए हैं, उनमें हिंसा के आरोपियों में एक नाम है।

मुख्यमंत्री व केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने 'सड़क और पुल निर्माण में उभरती नवीनतम प्रवृत्तियों और तकनीकों' पर केंद्रित 2 दिवसीय सेमिनार का शुभारंभ किया

खराब सड़क पर सोशल मीडिया पर लोग हमें ठोंकते हैं: श्री गडकरी

भोपाल (नप्र)। भोपाल के रवींद्र भवन में पीडब्ल्यूडी और इंडियन रोड कांग्रेस की सेमिनार हो रही है। केंद्रीय मंत्री गडकरी और सीएम डॉ. मोहन यादव ने सेमिनार का शुभारंभ किया। सेमिनार सड़क और पुल निर्माण में उभरते नए ट्रेंड और तकनीकों पर केंद्रित है।

केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने यहां अपने संबोधन में इजीनियर्स से कहा कि विभाग का मंत्री होने के नाते अच्छे काम का क्रेडिट हमें मिलता है लेकिन जब सड़क पर गड्ढे होते हैं तो डिसक्रेडिट भी मिलता है। सोशल मीडिया में लोग हमें ठोंकते हैं। आगे-पीछे कुछ नहीं देखते। केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने गलत डीपीआर बनाने वालों पर तंज कसते हुए कहा कि एक-एक को पद्मश्री और पद्म भूषण मिलना चाहिए। इतने गंदे काम हो सकते हैं इंजीनियरिंग प्वाइंट ऑफ व्यू से सोचिए जरा।

ये डीपीआर वाले तो महान लोग हैं- गडकरी ने कहा कि बेंगलुरू से चेन्नई एक्सप्रेस वे हाईवे हेलिकॉप्टर से देख रहा था। तीन बड़े-बड़े टॉवर रोड पर दिखे। उसको उठाने के लिए तीन-चार सौ करोड़ खर्च कर रहे हैं। मेरे साथ मध्यप्रदेश के अच्छे अधिकारी थे। पांडे करके। मैंने कहा- पांडे जी, तुमने आईआईटी पास किया है ना। तुमको समझ में नहीं आता कि ये टॉवर थे रास्ता थोड़ा सरका देते तो ये चार सौ करोड़ काहे के लिए खर्च होता। बोले- साहब! आप सही हैं। डीपीआर बनाने वालों की गलती है।

ये डीपीआर वाले तो इतने महान लोग हैं कि एक-एक जन को पद्मश्री और पद्म विभूषण ही देना चाहिए। मुख्यमंत्री से कहूंगा कि आप अपने यहां इंजीनियरिंग कॉलेज के विद्यार्थियों से कहो कि ये डीपीआर चेक करो। उनका अनुभव भी बढ़ेगा और क्रॉस चेक भी होगा।

ग्रीन हाइवे बनाने का काम कीजिए- 40 प्रतिशत पॉल्यूशन रोड वाले करते हैं। हमें गंभीरता से सोचना चाहिए। जो पेड़ ऑक्सीजन ज्यादा छोड़ते हैं उन्हें लगाइए। हमने 70 हजार पेड़ ट्रांसप्लांट किए। आप भी ग्रीन हाईवे बनाइए।

निर्माण कार्यों में प्रयुक्त प्रभावी तकनीक पर गौर करना तथा उनसे प्रेरणा लेना भी आवश्यक है: सीएम यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि सड़कों तथा अधोसंरचना के निर्माण में प्रयुक्त हो रही नवीन तकनीक और विधाओं पर विचार-विमर्श के दौरान प्राचीन काल में हुए निर्माण कार्यों में प्रयुक्त प्रभावी तकनीक पर गौर करना तथा उनसे प्रेरणा लेना भी आवश्यक है। राजा भोज द्वारा एक हजार साल पहले बनाया गया भोपाल का बड़ा ताल मितव्ययता के साथ प्रभावी जल प्रबंधन का अनूठा उदाहरण है। सम्राट अशोक और सम्राट विक्रमादित्य के काल के सिक्कों पर बनी मार्गों के चिन्ह उस काल में सड़कों की महत्ता को दर्शाते हैं।

खाड़ी देशों में तेरह हजार पीएफआई मेंबर्स हैं ऐक्टिव

ईडी का आरोप-इन्हें करोड़ों के फंड जुटाने का है टारगेट

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत में प्रतिबंधित संगठन पॉपुलर फ्रंट ऑफ इंडिया (पीएफआई) के खिलाफ 2 साल से चल रही ईडी की जांच में नए खुलासे हुए हैं। ईडी ने शुक्रवार को बताया कि पीएफआई के सिंगापुर और खाड़ी देशों में 13 हजार से ज्यादा ऐक्टिव मेंबर्स हैं, जिन्हें करोड़ों रुपए के फंड जुटाने की जिम्मेदारी मिली हुई है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, पीएफआई ने खाड़ी देशों में रह रहे प्रवासी मुस्लिम समुदाय के लिए डिस्ट्रिक्ट एग्जीक्यूटिव कमेटियां बनाई हैं। इन्हीं कमेटियों को फंड जुटाने की जिम्मेदारियां दी गई थीं। ईडी ने बताया कि विदेशों से जुटाए करोड़ों के फंड को अलग-अलग बैंकिंग चैनलों के साथ-साथ हवाला के माध्यम से भारत भेजा जाता था, ताकि इस फंड को ट्रेस न किया जा सके। यह फंड भारत में बैठे पीएफआई के अधिकारियों और आतंकियों तक आतंकी घटनाओं को अंजाम देने के लिए पहुंचाया जाता था। सितंबर 2022 में देशभर में पीएफआई के ठिकानों पर एनआईए और ईडी ने छापा मारा था। इसमें पीएफआई से जुड़े कई नेताओं को गिरफ्तार किया गया था। इन पर यूएपीए के तहत कार्रवाई की गई थी। छापेमारी के बाद केंद्र सरकार ने 2022 से पीएफआई संगठन को बैन कर दिया था। ईडी तब से पीएफआई के खिलाफ जांच कर रही है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 36.3°c न्यूनतम 30°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 20 अक्टूबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है, हमें नष्ट भी कर सकती है; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

बम की धमकी के बाद 30 फ्लाइट की इमरजेंसी लैंडिंग

6 दिन में अब तक 50 से ज्यादा विमानों में बम की धमकियां, 80 करोड़ का नुकसान

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडियन एयरलाइंस की 30 से ज्यादा फ्लाइट में शनिवार को बम होने की धमकी मिली। इसमें इंडिगो, एअर इंडिया, अकासा, विस्तारा, स्पाइसजेट, स्टार एअर और एलायंस एयर शामिल हैं। पिछले एक हफ्ते में 50 से ज्यादा विमानों को बम की धमकी मिल चुकी है, ये सभी झूठी साबित हुईं। इन धमकियों की वजह से एयरलाइंस को अब तक 80 करोड़ रुपए का नुकसान हो चुका है। लगातार मिल रही धमकियों के बीच केंद्र सरकार ने 16 अक्टूबर को फ्लाइट्स में एयर मार्शलों की संख्या को दोगुना करने का फैसला किया था। गृह मंत्रालय ने भी एविएशन मिनिस्ट्री से रिपोर्ट मांगी है। न्यूज एजेंसी के मुताबिक, इंडिगो की 3 फ्लाइट्स को बम की धमकी मिली

है। इसमें दिल्ली और मुंबई से इस्तांबुल जा रही इंडिगो भी शामिल हैं। इसके अलावा विस्तारा की उदयपुर से मुंबई जाने वाले विमान को भी धमकी मिली थी। इन सभी विमानों की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। हालांकि, शनिवार को 20 से ज्यादा विमानों को धमकी मिली है, लेकिन सभी की डिटेल सामने नहीं आई है। लंदन और दुबई जा रही फ्लाइट में बम की धमकी शुक्रवार की देर रात एअर इंडिया एक्सप्रेस और विस्तारा एयरलाइंस की एक-एक फ्लाइट में बम होने की धमकी दी गई। इनमें से दिल्ली से लंदन जा रही विस्तारा की फ्लाइट को फ्रैंकफर्ट डायवर्ट किया गया। जबकि 189 पैसेंजर्स को लेकर दुबई जयपुर आ रही एअर इंडिया एक्सप्रेस की उड़ान की जयपुर में रात 1:40 बजे इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। जांच में दोनों ही विमानों में कुछ भी संदिग्ध नहीं मिला। मुंबई पुलिस ने एक को अरेस्ट किया मुंबई की पुलिस ने फ्लाइट में बम रखने की झूठी खबर फैलाने के मामले में एक को गिरफ्तार किया है।

शनिवार को 15 फ्लाइट्स को बम से उड़ाने की मिली धमकी

नई दिल्ली (एजेंसी)। इंडिगो, एअर इंडिया और अकासा की 15 फ्लाइट्स को बम से उड़ाने की धमकी मिली है। यह आंकड़ा सिर्फ शनिवार का है। इस वजह से कई फ्लाइट्स की इमरजेंसी लैंडिंग करवानी पड़ी है। पिछले कई दिनों से कई विमानों को ऐसी ही धमकियां लगातार मिल रही है, केंद्र ने भी अपने स्तर पर जांच शुरू कर दी है। लेकिन आज शनिवार को बड़े स्तर पर कई एयरलाइन्स को ऐसी धमकी जिस वजह से हड़कंप मच गया। एक रिपोर्ट के मुताबिक इंडिगो को उसकी पांच इटरनेशनल फ्लाइट्स के लिए धमकी मिली है जिसमें कई नंबर शामिल है। एयरलाइन ने एक जारी बयान में कहा है कि वो हर जरूरी कदम उठाएगी और अधिकारियों से लगातार संपर्क साध रही है। जानकारी तो यह भी मिली है कि इंडिगो की 6ए 17 फ्लाइट मुंबई से इस्तानबुल जा रही थी। वहीं 6ए 184 फ्लाइट जोधपुर से दिल्ली के लिए निकली थी। लेकिन दोनों ही विमानों की इमजरेंसी लैंडिंग हुई है।

संक्षिप्त समाचार

हरियाणा के पंचकूला में खाई में गिरी स्कूल बस

15 बच्चे घायल

पंचकूला (एजेंसी)। हरियाणा के पंचकूला में शनिवार दोपहर पंजाब से मोरनी हिल्स जा रही बच्चों से भरी स्कूल बस खाई में पलट गई। हादसे में बस के ड्राइवर के अलावा 10 से 15 बच्चे घायल हो गए। बच्चे स्कूल ट्रिप पर मोरनी हिल्स जा रहे थे। सभी बच्चों को मोरनी

के प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया गया। गंभीर घायल बच्चों को पंचकूला के सेक्टर-6 स्थित अस्पताल के लिए रेफर कर दिया। बस ड्राइवर विनोद छाबड़ा के दोनों पैरों में फ्रैक्चर है। उन्हें चंडीगढ़ पीजीआई रेफर किया गया है। अभी यह स्पष्ट नहीं हो पाया है कि हादसा कैसे हुआ। पुलिस की टीमें जांच कर रही हैं।

मणिपुर में उग्रवादियों ने गांव पर बम फेंके

फायरिंग जारी

इम्फाल (एजेंसी)। मणिपुर के जिरिबाम जिले में एक बार फिर हिंसा भड़की है। बोरोबेकरा इलाके के एक गांव में उग्रवादियों ने शनिवार सुबह 5 बजे फायरिंग कर दी। बोरोबेकरा पुलिस ने बताया कि उग्रवादियों ने गांव में बम भी फेंके हैं। सूचना मिलने पर पुलिस और

सीआरपीएफ की टीमें मौके पर पहुंची हैं। उग्रवादियों और सुरक्षाबलों के बीच फायरिंग लगातार जारी है। फिलहाल हमले में किसी के घायल होने की सूचना नहीं है। बुजुर्गों, महिलाओं और बच्चों को सुरक्षित जगहों पर पहुंचाया गया है। पुलिस ने बताया कि बोरोबेकरा जिरिबाम टाउन से 30 किमी दूर है। इस इलाके में घने जंगल और पहाड़ हैं और यहां पहले भी गोलीबारी हो चुकी है।

जम्मू-कश्मीर के पुंछ में दो आतंकी गिरफ्तार

3 ग्रेनेड और 1 पिस्तौल भी बरामद

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर के पुंछ में शनिवार सुबह सुरक्षाबलों ने 2 आतंकियों को गिरफ्तार किया है। इनके पास से 3 ग्रेनेड और 1 पिस्तौल भी बरामद की गई है। सेना के अधिकारियों ने बताया ये दोनों जम्मू-कश्मीर गजनवी फोर्स नाम के संगठन से जुड़े हाइब्रिड आंतकी हैं। हाइब्रिड आतंकी आम नागरिकों

की तरह ही इलाके में रहते हैं, लेकिन चोरी-छिपे आतंकवादी गतिविधियों में शामिल होते हैं या आतंकियों की सहायता करते हैं। इन्हें पहचानना मुश्किल हो जाता है। जम्मू पुलिस के डीसीपी आनंद जैन ने कहा कि पूछताछ में पता चला कि दोनों आतंकी ने मंदिर, सेना के ठिकानों और एक अस्पताल पर ग्रेनेड फेंकने की प्लानिंग कर रहे थे।

रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय कृषि विभाग द्वारा विश्व खाद्य दिवस पर एक दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई

भोपाल। रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय में विश्व खाद्य दिवस पर एकदिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। यह कार्यशाला विश्वविद्यालय के उद्यानिकी विभाग, कृषि शोध संस्थान एवं कृषि संकाय के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई। जिसमे 'खाद्य सुरक्षा- चुनौतियां और समाधान' विषय पर विस्तृत चर्चा की गयी। कार्यक्रम में बतौर मुख्य वक्ता डॉ. पूजा सिंह, उप निदेशक, कृषि विभाग, मध्य प्रदेश शासन, इंजी. डी. एल. रायकवार, पूर्व डीजीएम, बीइएमएल (मिनिस्ट्री ऑफ़ डिफेंस गवर्नमेंट ऑफ़ इंडिया) डॉ. संजीव गुप्ता, डीन एकेडमिक, डॉ. एच. डी. वर्मा, डीन, कृषि संकाय और डॉ. अशोक कुमार वर्मा, सहायक डीन विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस मौके पर डॉ. पूजा सिंह उप निदेशक, कृषि विभाग, मध्य प्रदेश शासन ने 'मध्य प्रदेश- भारत की खाद्य टोकरी' के विषय मे फल, सब्जियों एव खाद्यन पर एक महत्वपूर्ण व्याख्यान दिया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि प्रसंस्करण उद्योग कृषि उत्पादों को बेहतर तरीके से संरक्षित

करने और उनकी गुणवत्ता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके उपरांत इंजी. डी. एल. रायकवार ने 'मशरूम का उत्पादन एवं मूल्य संवर्धन' पर एक विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। मशरूम उत्पादन के क्षेत्र में हो रही प्रगति और इसकी संभावनाओं पर चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि यह एक ऐसा उद्योग है, जो कम पूंजी और सीमित संसाधनों के साथ शुरू किया जा सकता है। डॉ. एच. डी. वर्मा, डीन, कृषि संकाय ने स्वागत भाषण देते हुए बताया कि यह दिन सिर्फ कृषि और खाद्य क्षेत्र के लिए नहीं, बल्कि पूरे समाज के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया की प्रतिवर्ष हजारों करोड़ों का खाद्यान एवं उद्यानिकी उत्पाद खराब होते हैं, जिसको संरक्षित करने की अवश्यकता है। इसके बाद डॉ. संजीव गुप्ता, डीन एकेडमिक ने मध्य प्रदेश में कृषि की वर्तमान स्थिति एव कृषि संकाय के सफलता के आयामों पर अपने विचार साझा किए।

कार्यक्रम के दौरान छात्रों के बीच कृषि और खाद्य प्रसंस्करण उद्योग से संबंधित एक क्विज़ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में भाग लेने वाले छात्रों में से प्रथम, द्वितीय, तृतीय पुरस्कार विजेताओं की घोषणा कर उन्हें पुरस्कृत किया गया। इस कार्यशाला के दौरान फ़ूड प्रोसेसिंग एवं हाईटेक कस्टम हायरिंग सेंटर की तकनिकी के बारे में अवगत कराया गया।

कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर डॉ. अशोक कुमार वर्मा, सहायक डीन ने कार्यशाला की भूमिका रखी। कार्यक्रम का सयोंजन डॉ. शुभम कुमार कुलश्रेष्ठ, प्रमुख, उद्यानिकी विभाग और डॉ. बलवीर सिंह, सहायक प्रोफेसर, उद्यानिकी विभाग द्वारा किया गया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनोहर सरयाम, सहायक प्रोफेसर ने किया। अंत में डॉ. शुभम कुमार कुलश्रेष्ठ ने कार्यक्रम में शामिल सभी गणमान्य अतिथियों, वक्ताओं, शिक्षकों और छात्रों को इस आयोजन को सफल बनाने के लिए आभार प्रकट किया। कार्यक्रम में कृषि क्षेत्र से जुड़े कई प्रतिष्ठित विशेषज्ञ, प्राध्यापक, छात्र एवं छात्राएं शामिल हुए।

राहुल बोले, महिलाएं दफ्तरों में अब सिम्बॉलिक पद न लें

● उन्हें अपने हक के लिए लड़ना चाहिए, आजकल सिर्फ विचारधाराओं की लड़ाई होती है

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने शुक्रवार को दिल्ली में शक्ति अभियान की मीटिंग में महिलाओं से कहा कि महिलाओं को ऑफिस में केवल को महिला संख्या दिखाने वाले सिम्बॉलिक पद स्वीकार नहीं करने चाहिए। उन्हे अपने हक के लिए लड़ना चाहिए और बड़े पदों की मांग करनी चाहिए। राहुल ने महिलाओं से कहा कि आज की राजनीति में केवल पॉलिटिकल पार्टियों की ही लड़ाई नहीं होती है, बल्कि आज की राजनीति अलग-अलग विचारधाराओं की लड़ाई बन गई है। उन्होंने कहा कि आज राजनीति में लड़ाई सिर्फ सत्ता के लिए नहीं बल्कि

लीडरशिप के लिए भी है। दरअसल, शक्ति अभियान महिलाओं का एक संगठन है। इसमें अलग-अलग क्षेत्र में अच्छा प्रदर्शन करने वाली महिलाएं शामिल होती हैं। यह मीटिंग शनिवार और रविवार को भी जारी रहेगी। राहुल बोले- मैं महिलाओं के अधिकारों के साथ हूं राहुल ने मीटिंग में कहा कि इंदिरा फेलोशिप जमीनी स्तर की महिला नेताओं के एक मजबूत नेटवर्क को खड़ा करने में मदद कर रहा है।

जम्मू-कश्मीर को स्टेटहुड के प्रस्ताव को एलजी की मंजूरी

उमर दो दिन में पीएम मोदी से मिलेंगे, डिप्टी सीएम बोले-केंद्र वादा पूरा करे

श्रीनगर (एजेंसी)। जम्मू-कश्मीर को पूर्ण राज्य का दर्जा देने के प्रस्ताव को उपराज्यपाल ने शनिवार को मंजूरी दे दी। गुरुवार को राज्य के दर्जे की बहाली के लिए मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला की कैबिनेट ने प्रस्ताव पास किया था। डिप्टी सीएम सुरिंदर कुमार चौधरी ने कहा, केंद्र को अपना वादा पूरा करना चाहिए और राज्य का दर्जा बहाल करना चाहिए, यह हमारा अधिकार है। हम वही मांग रहे हैं जो उन्होंने पहले ही वादा किया था। इस मांग को लेकर उमर अब्दुल्ला 2 दिन में दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात करेंगे। दरअसल, केंद्र सरकार ने 5 अगस्त 2019 को जम्मू-कश्मीर से अनुच्छेद 370 हटाने के साथ ही प्रदेश का पूर्ण राज्य का दर्जा खत्म करते हुए उसे दो यूनियन टेरिटरी (जम्मू-कश्मीर और लद्दाख) में बांट दिया था। उमर ने

विधानसभा चुनाव के दौरान भी कहा था कि कैबिनेट की पहली मीटिंग में ही जम्मू-कश्मीर को राज्य का दर्जा बहाल करने के प्रस्ताव को मंजूर किया जाएगा। 16 अक्टूबर को सीएम पद की शपथ लेने के बाद अगले दिन ही उन्होंने प्रस्ताव पास किया। कैबिनेट की मीटिंग में डिप्टी सीएम सुरिंदर चौधरी, मंत्री सकीना मसूद इट्टू, जावेद अहमद राणा, जाविद अहमद डार और सतीश शर्मा भी मौजूद थे। पीडीपी ने उमर कैबिनेट के फैसले को लेकर कहा कि यह हमारे लिए बड़ा झटका है। उमर सरकार ने स्टेटहुड बहाली का प्रस्ताव क्यों पारित किया। 370 की बहाली पर भी फैसला करना चाहिए था। पीडीपी के विधायक वहीद पर्रा ने शुक्रवार को कहा- उमर अब्दुल्ला का राज्य के दर्जे पर प्रस्ताव पारित करना 5 अगस्त, 2019 के केंद्र के फैसले का समर्थन करने से कम नहीं है। उमर ने 370 को बहाल करने के वादे पर ही वोट मांगे थे। प्रस्ताव को उपराज्यपाल के माध्यम से केंद्र सरकार को भेजा जाएगा।

हिज्बुल्लाह ने नेतन्याहू के निजी आवास पर किया ड्रोन अटैक

आईडीएफ बोला-

होम टाउन सिसेरिया में हमला, इजराइली पीएम और परिवार मौजूद नहीं था

तेल अवीव (एजेंसी)। हिजबुल्लाह ने शनिवार को इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के होम टाउन सिसेरिया में ड्रोन अटैक किया। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक, आईडीएफ ने हमले की पुष्टि की है। आईडीएफ ने कहा कि इस ड्रोन अटैक में पीएम नेतन्याहू का निजी आवास निशाने पर था। हमले के वक्त नेतन्याहू और उनकी पत्नी सारा घर पर नहीं थे। ड्रोन सिसेरिया की एक इमारत पर गिरा। कोई हताहत नहीं हुआ है। इजराइली डिफेंस फोर्स ने कहा कि शनिवार को लेबनान से इजराइल पर 3 ड्रोन दागे गए।

इजराइली फोर्सेस ने 2 ड्रोन को मार गिराया। अटैक के बाद गिलोट सैन्य अड्डे पर अलार्म बजने लगे। आईडीएफ ने माना है कि उनका एयर डिफेंस सिस्टम हमले को रोकने में विफल रहा। उन्होंने कहा कि वे ड्रोन घुसपैठ की जांच कर रहे हैं। आईडीएफ ने कहा कि पिछले एक घंटे में (भारतीय समय से दोपहर 1 से 2 बजे के बीच) लेबनान से उत्तरी इजराइल पर लगभग 55 रॉकेट दागे गए हैं। कुछ को रोक लिया गया है जबकि कई खुले इलाके में गिरे हैं। टाइम्स ऑफ इजराइल की रिपोर्ट के मुताबिक हमले में कम से कम 9 लोग घायल हुए हैं। इजराइली हमले में हमास चीफ याह्या सिनवार की मौत के बाद पहली बार ईरान के सुप्रीम लीडर आयतुल्लाह अली खामेनेई का बयान आया है। टाइम्स ऑफ इजराइल के मुताबिक उन्होंने कहा है कि याह्या सिनवार की मौत के बाद भी हमास खत्म नहीं हुआ है। सिनवार अपने शहीद दोस्तों के पास चले गए हैं।

महाराष्ट्र में एनडीए के बीच सीट शेयरिंग फाइनल

शाह के घर 2 घंटे चली बैठक, भाजपा 155 सीटों पर लड़ेगी

नई दिल्ली/मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र में सीट शेयरिंग को लेकर शुक्रवार देर रात अमित शाह के घर एनडीए के घटक दलों की ढाई घंटे बैठक चली। इसमें मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे, डिप्टी सीएम देवेंद्र फडणवीस और डिप्टी सीएम अजित पवार शामिल हुए। बैठक में राज्य की 288 विधानसभा सीटों पर भाजपा, शिवसेना शिंदे और एनसीपी अजित गुट में सहमति बन गई है। सूत्रों के मुताबिक, भाजपा 155, शिवसेना शिंदे गुट

78 और एनसीपी अजित पवार गुट 55 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारेगी। बैठक में छोटी पार्टियों को भी कुछ सीटें दिए जाने पर सहमति बनी। कुछ सीटों को लेकर पेंच अमित शाह के निर्देश के बाद राज्य स्तर पर सुलझाया जाएगा। दिल्ली में अमित शाह से मुलाकात के बाद दोनों उप मुख्यमंत्री, देवेंद्र फडणवीस और अजित पवार महाराष्ट्र लौट आए हैं, जबकि मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के अभी भी दिल्ली में होने की खबर है। सूत्रों के मुताबिक, भाजपा को अपने कोटे से छोटी पार्टियों को सीट देनी है। किसी पार्टी के पास जिताऊ उम्मीदवार नहीं होने की स्थिति में 5 जगह प्लस-माइनस किया जा सकता है। भाजपा आज 106 नामों की पहली लिस्ट जारी कर सकती है।

झारखंड में 70 सीटों पर मिलकर लड़ेंगी कांग्रेस और जेएमएम

राजद को 7 सीटें, 4 पर फैसला नहीं, राहुल गांधी रांची पहुंचे

रांची (एजेंसी)। कांग्रेस और झारखंड मुक्ति मोर्चा के बीच सीटों के बंटवारे को लेकर सहमति बन गई है। सीएम हेमंत सोरेन और कांग्रेस के झारखंड प्रभारी गुलाम अहमद मीर सहित कई नेताओं ने संयुक्त प्रेस कॉन्फ्रेंस में इस बात की घोषणा की। उन्होंने कहा- कांग्रेस और जेएमएम 70 सीटों पर मिलकर चुनाव लड़ेगी, बाकी बची सीटों के लिए जल्द ही जानकारी साझा की जाएगी। सीएम हेमंत सोरेन ने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कहा- अन्य सीटों के लिए मंथन किया जाएगा। हमारे साथ वाम दल भी जुड़ रहे हैं उनके साथ भी सीट साझा की जाएगी। राजद को 7 सीट देने पर सहमति बनी है। होटल रेडिसन ब्लू में राजद की बैठक चल रही है। मीटिंग खत्म होने के बाद उनका पक्ष क्या आता है, इसके बाद आगे की बात सामने आएगी। कांग्रेस नेता और सांसद राहुल गांधी आज झारखंड दौरे हैं। वे रांची एयरपोर्ट से सीधे रेडिसन ब्लू होटल पहुंचे हैं। जानकारी के मुताबिक, झारखंड

चुनाव को लेकर वे प्रदेश कांग्रेस के नेताओं के साथ मीटिंग की। मीटिंग के बाद राहुल गांधी सीधे शौर्य सभागार में आयोजित संविधान वाले कार्यक्रम में शामिल हुए और फिर यहां से निकलकर सीधा एयरपोर्ट चले गए। इन दोनों ही जगह के कार्यक्रम में मीडिया की एंट्री नहीं रही। इसी होटल में बिहार के नेता प्रतिपक्ष और राजद नेता तेजस्वी यादव अपने पार्टी कार्यकर्ताओं पदाधिकारी के साथ मीटिंग कर रहे थे। वहीं, जानकारी के मुताबिक, सीएम हेमंत सोरेन भी रेडिसन ब्लू होटल पहुंच गए हैं। ऐसे में तीनों नेताओं के बीच सीट शेयरिंग को लेकर बातचीत हो गई है। कांग्रेस नेता मीर ने कहा कि जेएमएम के अलावा इंडिया गठबंधन के घटक दल राजद के नेताओं से भी शुक्रवार की सुबह उनकी बात हुई है। सब कुछ ठीक है। कहीं परेशानी वाली बात नहीं है। इंडिया गठबंधन में नए पार्टनर से भी बात होनी है। सूत्रों का कहना है कि गुरुवार की रात सीएम आवास पर कांग्रेस नेत सीएम से मिले।

ग्वालियर से इंदौर आया 10 क्विंटल मावा जांच में

खाद्य विभाग ने बस को चेक किया तो हुआ खुलासा, पॉम ऑइल के मिलावट की आशंका

इंदौर (एजेंसी)। खाद्य विभाग ने शनिवार को एक बस से इंदौर लाए गए 10 क्विंटल मावा और मिठाई को जांच में लिया है। विभाग को

सूचना मिली थी कि इन दिनों तीन इमली बस स्टैंड पर ग्वालियर से बसों में मिलावटी मावा आ रहा है। इस पर टीम ने ग्वालियर से आई सुनील ट्रैवल्स की बस को चेक किया। बस की साइड वाली डिक्की में 15 से ज्यादा बड़े बॉक्स थे। इन्हें खोलने पर कुछ में मावा तो कुछ में मिठाइयाँ भी मिलीं। एक अन्य बस की भी तलाशी ली जा रही है। बस की साइड डिक्की में मिले मावा और मिठाई से भरे बड़े बॉक्स। फूड इंस्पेक्टर मनीष स्वामी ने बताया कि मावा और मिठाई में पाम ऑयल मिला होने की आशंका है। ड्राइवर और हेल्पर से पूछताछ के साथ-साथ जांच की जा रही है।

नावेल्टी मार्केट की दुकानों पर फिलहाल नहीं होगी कार्रवाई

निगम के नोटिस पर हाई कोर्ट में हुई सुनवाई के बाद दुकानदारों को राहत

इंदौर (एजेंसी)। लक्ष्मी नावेल्टी मार्केट की बेसमेंट दुकानों पर

कार्रवाई करने पर हाई कोर्ट ने रोक लगा दी है। नगर निगम की तरफ से 12 दुकानों को 3 दिन में खाली करने और पार्किंग में बदलने के नोटिस दिए गए थे, जिसके खिलाफ हाई कोर्ट में याचिका लगाई गई थी। यह याचिका हाई कोर्ट में याचिकाकर्ता महिमा मोरियानी की ओर से लगाई गई। याचिकाकर्ता ने कोर्ट में कहा कि इन दुकानों को स्टोर रूम के रूप में मंजूरी मिली हुई है और। वहीं नक्शे के अनुसार ही उनका उपयोग हो रहा हैं। निगम के नोटिस के संबंध में हाई कोर्ट ने आदेश दिया है कि फिलहाल किसी प्रकार की बलपूर्वक कार्रवाई नहीं की जाए। कोर्ट ने निर्देश दिया कि संयुक्त रूप से निरीक्षण किया जाए, जिसमें निगम के अधिकारी और संपत्ति के मालिक दोनों ही मौके पर मौजूद रहेंगे।

सैंडविच देने में देरी तो बदमाश ने किया हमला

पुलिस ने शिकायत पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में एक ठेले पर सैंडविच लेने आए एक बदमाश को थोड़ी देर इंतजार करना भी ना गवार गुजरा। उसने दुकान के

मालिक को अपशब्द कहते हुए उस पर हमला कर दिया। मामले में पुलिस ने शिकायत के आधार पर आरोपी के खिलाफ केस दर्ज किया है। तिलक नगर थाना पुलिस के अनुसार, घटना स्कीम नंबर 140 सांची पॉइंट की है। फरियादी प्रदीप उर्फ बबली, पिता धन्नालाल कटारे, सैंडविच का ठेला लगाते हैं। शुक्रवार को उनकी दुकान पर आरोपी सुनील भालसे, निवासी शांति नगर मूसाखेड़ी, आया। उसने सैंडविच मांगा, तो प्रदीप ने कहा कि वह पहले दूसरे ग्राहकों को सैंडविच देने के बाद उसे देगा। आरोपी सुनील इसी बात पर नाराज हो गया। उसने कहा कि क्या वह उसे नहीं पहचानता है, और यह कहकर गालियां देते हुए मारपीट शुरू कर दी। उसने ठेले पर रखा सामान भी फेंक दिया। फरियादी ने इसके बाद थाने पहुंचकर मामले में शिकायत दर्ज करवाई है। इधर, सुनील भालसे की शिकायत पर दीपक पांडे और बबली दोनों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया है। उसने आरोप लगाया है कि बिना वजह दुकानदार और उसके कारीगर ने उसके साथ मारपीट की है।

विहिप प्रचारक को पाकिस्तान से मिली धमकी

इंदौर (एजेंसी)। विश्व हिन्दू परिषद के संपर्क प्रचारक संतोष शर्मा को इस बार पाकिस्तान से धमकी मिली है। इसे लेकर उन्होंने पुलिस को शिकायत की है। साथ ही सुरक्षा की मांग की है। शर्मा का कहना है कि, उन्हें 16 अक्टूबर की शाम को पाकिस्तान के नंबर से फोन आया। इसमें किसी व्यक्ति ने अरबी में उर्दू जैसे शब्द बोले और कहा कि जो भी हमारे धर्म के खिलाफ होगा उसकी सजा मौत होगी। शर्मा का कहना है कि उन्हें ऐसे धमकी भरे कॉल पहले भी मिल चुके हैं। उन्होंने खुद के और परिवार की सुरक्षा पर चिंता जताई है। एडिशनल पुलिस कमिश्नर को दिए आवेदन में उन्होंने सुरक्षा की मांग की है। गौरतलब है कि शर्मा अब तक 12 से ज्यादा अधिक मुस्लिमों परिवारों की घर वापसी करा चुके हैं।

इंदौर के यात्रियों को दिए एक्सपायरी डेट के बिस्किट

नागपुर में किया हंगामा; इंडिगो ने फ्लाइट लेट होने पर दिया था नाश्ता

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के यात्रियों ने शनिवार सुबह नागपुर एयरपोर्ट पर जमकर हंगामा किया। बताया जा रहा है कि यात्रियों को नागपुर एयरपोर्ट पर इंडिगो एयरलाइंस द्वारा एक्सपायरी बिस्किट दिए गए। दरअसल, नागपुर से इंदौर आने वाली फ्लाइट आज ऑपरेशनल कारणों से नागपुर से 3 घंटे लेट दोपहर 12 बजे रवाना हुई। जिसे देखते हुए इंडिगो कंपनी ने यात्रियों को नाश्ते में बिस्किट दिए थे, जो कि एक्सपायरी डेट वाले निकले। इसके चलते यात्रियों ने हंगामा कर दिया। इंडिगो एयरलाइंस की फ्लाइट नंबर 6ई7745 रोजाना सुबह 8.45 बजे नागपुर से उड़ान भरकर सुबह 10 बजे इंदौर आती है, लेकिन आज यह ऑपरेशनल कारणों से 3 से 4 घंटे लेट चल रही है। एयरलाइंस ने नागपुर एयरपोर्ट पर यात्रियों को सूचना दी थी की फ्लाइट 11.35 बजे नागपुर से इंदौर के लिए उड़ान भरेगी।

एक महीने पुराने बिस्किट दिए, कुछ ने खा भी लिए

नागपुर से इंदौर आ रहे एक यात्री ने बताया कि एयरलाइंस कंपनी के कर्मचारी काफी देर तक फ्लाइट के आधे से 1 घंटे में उड़ान भरने की बात कहते रहे। जब यात्रियों ने हंगामा किया, तब एयरलाइंस कर्मचारियों ने बताया कि विमान 3 घंटे बाद उड़ान भरेगा। इसके बाद जो बिस्किट के पैकेट कंपनी ने दिए थे वह 1 महीने पहले ही एक्सपायर हो चुके थे। जब तक यात्रियों को इस बारे में पता चलता तब तक कुछ यात्री बिस्किट खा चुके थे।

एयरलाइंस कंपनी ने मांगी माफी

सूत्रों के अनुसार इंडिगो एयरलाइंस के आला अधिकारियों को नागपुर एयरपोर्ट पर यात्रियों के हंगामे की सूचना दी गई। इस पर अधिकारियों ने यात्रियों से माफी मांगते हुए कहा कि अनजाने में ऐसा हुआ है। आप लोगों को हुई असुविधा के लिए हम खेद व्यक्त करते हैं। अनजाने में ऐसा ब्रेकफास्ट परोसा गया, जो हमारे मानकों को पूरा नहीं करता था। हम विस्तृत जांच कर रहे हैं, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाएं न हों।

इंदौर में रेसीडेंसी कोठी का नाम बदला, कांग्रेस नेता भड़के

महाराष्ट्र चुनाव में वोट बैंक के लिए शिवाजी कोठी करने का आरोप, यह अहिल्याबाई होलकर का अपमान

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर में आज हुई मेयर इन काउंसिल की बैठक में रेसीडेंसी कोठी का नाम बदलकर शिवाजी कोठी (शिवाजी वाटिका) करने का प्रस्ताव पास हुआ है। शुक्रवार को हुई बैठक में नामकरण प्रस्तावों पर चर्चा में सबसे महत्वपूर्ण प्रस्ताव रेसीडेंसी कोठी का ही था। इसे लेकर कांग्रेस ने बीजेपी पर हमला बोला है। कांग्रेस नेता राकेश सिंह यादव का कहना है की महाराष्ट्र में होने वाले चुनाव को देखते हुए यह किया गया है। वहां के वोट बैंक के लिए रेसीडेंसी का नाम बदलकर शिवाजी कोठी रखा गया है। यह देवी अहिल्या की उपेक्षा है। बता दें कि अंग्रेज शासन काल में यह कोठी मालवा-निमाड में ब्रिटिश सत्ता का केंद्र थी। इसका निर्माण लगभग 204 वर्ष पहले किया गया था। मध्य प्रदेश कांग्रेस कमेटी के प्रदेश महासचिव ने सोशल मीडिया नेटवर्क एक्स पर नामकरण के विरोध में पोस्ट करते हुए लिखा है की इंदौर में रेसीडेंसी कोठी का नामकरण देवी अहिल्या रेसीडेंसी कोठी रखना था।

इंदौर विकसित करने में होलकर राजाओं का सर्वाधिक योगदान हैं। देवी अहिल्या बाई होलकर की उपेक्षा की गई है। महाराष्ट्र चुनाव में वोट बैंक के लिए शिवाजी के नाम पर नामकरण किया गया है। वहीं इस पूरे मामले की लेकर इंदौर शहर कांग्रेस का कहना है की हम अभी नामकरण मामले को समझ रहे हैं। कांग्रेस आलाकमान से बात कर आगे क्या करना है इस बात कि निर्णय लेंगे।

हरकत कर रहे पिता को नाबालिग ने डंडे से पीटा

देर शाम घर लौटने पर मां को बताई पूरी कहानी; गिरफ्तार करवाया

इंदौर (एजेंसी)। गांधी नगर इलाके में रहने वाला एक दरिंदा पिता घर में 14 साल की बेटी से हरकत करने लगा। बच्ची ने तभी डंडा उठाया और पिता के मुंह पर दे मारा। शाम को मां के आने पर जानकारी दी और पिता को गिरफ्तार करवाया। एसीपी रुबीना मेजबानी ने बताया कि घटनाक्रम गुरुवार दोपहर का है। कक्षा 8 में पढ़ने वाली 14 साल की एक बच्ची मां के साथ गांधीनगर थाने पहुंची थी। बच्ची ने बताया कि उसकी मां मजदूरी करके घर चलाती है। पिता कुछ काम नहीं करता है। शराब पीकर घर में पड़ा रहता है। रोज की तरह बच्ची दोपहर में स्कूल से घर लौटी तब मां काम पर और भाई स्कूल गया था। वह घर आई तो पिता नशे में धुत था। वह हरकत करने लगा तो उसे सबक सिखाकर मां को पूरी घटना बताई। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है।

इधर, निजी कॉलेज का एचओडी कैबिन में छात्राओं को बुलाता, अश्लील बात करता- एक निजी कॉलेज की छात्राओं ने जर्नलिज्म विभाग के एचओडी जुबैर खान पर छेड़छाड़ के आरोप लगाए हैं। छात्राओं का कहना है कि आरोपी उन्हें कक्ष में बुलाकर अश्लील बातें करता था। 2 छात्राओं ने विजय नगर थाने में शिकायत दर्ज करवाई। 8 और छात्राओं से इसी तरह की हरकत करने की बात सामने आई है। इधर, एक संगठन के कार्यकर्ताओं ने कॉलेज परिसर के बाहर आरोपी जुबैर का पुतला फूंका। मामला तब सामने आया जब कुछ छात्राओं ने कॉलेज प्रबंधन से शिकायत की कि जुबैर उन्हें परेशान करता है। किसी भी कार्यक्रम में अगर वे सहपाठी छात्रों से बात करती हैं तो उसके लिए भी मना करता है।

लव जिहाद के आरोपी की चौथी बार जमानत निरस्त

पीड़िता कर चुकी है जज की शिकायत; वकील बोले- समझौते के लिए दबाव बना रहा आरोपी पक्ष

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर हाई कोर्ट ने लव जिहाद के आरोपी अशरफ मंसूरी उर्फ आशू की जमानत चौथी बार खारिज कर दी है। आरोपी ने पीड़िता से एप के जरिए दोस्ती की थी। पीड़िता के साथ ज्यादती की और धर्म परिवर्तन के लिए दबाव भी बनाया। मामले में पीड़िता के एडवोकेट प्रशांत वर्मा का कहना है कि संभवत- यह पहला मौका है, जब लव जिहाद के आरोपी की हाई कोर्ट से चार बार जमानत रद्द हुई है। पीड़िता को आरोपी पक्ष द्वारा धमकाया जा रहा है। साथ ही समझौते के लिए भी उस पर दबाव बनाया जा रहा है। इस संबंध में जल्द ही शिकायती आवेदन देंगे।

ऑनलाइन एप पर नाम बदल की थी दोस्ती

23 वर्षीय युवती की 2019 में हेलो एप के माध्यम से आरोपी अशरफ मंसूरी (24) से दोस्ती हुई थी। आरोपी ने अपना नाम आशु बताया और कहा कि वो हिंदू है। बाद में युवक की असलियत सामने आ गई। इस बीच आरोपी ने शादी का झांसा देकर पीड़िता के साथ कई बार शारीरिक संबंध बनाए। उस पर धर्म परिवर्तन करने के लिए दबाव बनाया। आरोपी ने जब शादी करने से मना कर दिया तो पीड़िता 12 दिसंबर 2023 को जूनी इंदौर थाने पहुंची थी। पीड़िता की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी युवक के खिलाफ धारा 376, 354, एससी-एसटी एक्ट और मध्यप्रदेश धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम के तहत केस दर्ज कर लिया। मामले में इंदौर जिला कोर्ट में सुनवाई चल रही है। आरोपी युवक जेल में है।आरोपी अशरफ उर्फ आशू जिसने ऑनलाइन एप पर नाम बदल पीड़िता से दोस्ती की थी।

पीड़िता ने की थी जज की शिकायत

रेप पीड़िता ने जज की शिकायत राष्ट्रपति, सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश (सीजेआई), राष्ट्रीय महिला आयोग और हाईकोर्ट के प्रशासनिक जज से की थी। रेप पीड़िता ने शिकायत में गंभीर आरोप लगाए थे। पीड़िता और उसके वकील ने कहा था कि- जज ने प्रति परीक्षण के वक्त कोर्ट रूम का बंद दरवाजा खुलवा कर बयान लिए।

इंदौर में सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल से भागा अपहरण का आरोपी

मुंह के कैंसर के चलते 15 दिन से अस्पताल में भर्ती था, देर रात हथकड़ी खोलकर हुआ फरार

इंदौर (एजेंसी)। उज्जैन जेल में बंद एक कैदी को तबीयत खराब होने पर पिछले दिनों संयोगितागंज थाना क्षेत्र स्थित सुपर स्पेशियलिटी अस्पताल में भर्ती कराया गया था। शुक्रवार को मौका मिलते ही कैदी फरार हो गया। मामले में पुलिस आरोपी को तलाश कर रही है। टीआई सतीश पटेल के मुताबिक इरफान लाला पिता सरवन खान (31), निवासी खुदीराम बोस मार्ग उज्जैन भार्दवि की धारा 262 के तहत उज्जैन जेल में बंद है। अपहरण के आरोपी इरफान लाला को तबीयत खराब होने पर 4 अक्टूबर को सुपर स्पेशलिस्ट अस्पताल में भर्ती कराया गया था। तब से वह अस्पताल में ही वार्ड 201 में भर्ती था। शुक्रवार रात मौका पाकर वह हथकड़ी निकालकर पुलिस अभिरक्षा से भाग निकला। मामले में पुलिस में दो टीमें लगाकर आरोपी की सरगर्मी से तलाश कर रही है। आरोपी को मुंह के कैंसर की बीमारी थी। इलाज के लिए उसे भर्ती किया गया था।

गर्दन पर चाकू रख गैरेज संचालक का किया था अपहरण- उज्जैन पुलिस के अनुसार ग्रीन पार्क कालोनी में रहने वाला आमिर पिता हैदर अली (39) घर से ही गैरेज और ऑटो डील का संचालन करता था। 11 नवम्बर की रात 11.30 बजे वह कालोनी में रहने वाले अरशद खान और ताहिर खत्री के साथ घर के बाहर बैठा था। उसी दौरान ऑटो से पांच बदमाश आए और गर्दन पर चाकू रख ऑटो में बैठने के लिए कहा। आमिर को उसके साथियों ने बचाने का प्रयास किया। इस पर बदमाश हथियार दिखाकर धमकाते हुए आमिर को अपने साथ ले गए। परिवार ने डायल-100 पर सूचना दी। पुलिस मौके पर पहुंची, लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया। परिवार भी कुछ बता नहीं पा रहा था। पुलिस मामले की जांच में लगी थी, इस बीच गैरेज संचालक नीलगंगा थाने पहुंच गया। उसने चाकू दिखाकर अपहरण करने वाले इरफान लाला, अजहर, कल्लन, शादाब और जुनैद के खिलाफ पांच लाख की फिरौती मांगने और मारपीट कर जान से मारने की धमकी देने की शिकायत दर्ज कराई। अपहरण करने वाले लोहे का पुल क्षेत्र के रहने वाले थे। गैरेज संचालक डर के चलते भोपाल चला गया था।

इंदौर में चोरों ने बनाया किराना दुकान को निशाना

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के लसूडिया इलाके में एक किराना दुकान को चोरों ने निशाना बनाया। आरोपी दुकान से तेल और घी व अन्य सामान चुरा ले गए। पुलिस द्वारा सीसीटीवी फुटेज खंगाल आरोपियों का पता लगाने की कोशिश की जा रही है। लसूडिया थाना पुलिस के अनुसार फरियादी धन सिंह साहू निवासी राहुल गांधी नगर की शिकायत पर अज्ञात चोरों के खिलाफ केस दर्ज किया गया है। फरियादी ने पुलिस को बताया कि उसकी महालक्ष्मी किराना स्टोर नाम से दुकान है। घटना करीब डेढ़ माह पुरानी है। वह दुकान पर पहुंचा तो दरवाजे के नकुचे टूटे हुए मिले। अंदर जाकर देखा तो पूरा सामान बिखरा हुआ था। किराना सामान में से क्रीम पाउडर, सिगरेट के पैकेट, सांची घी के 11 पैकेट, स्वादिष्ट तेल के पांच-पांच किलो के चार डिब्बे और अन्य फुटकर सामान के साथ ही गल्ले में रखी नगदी चोरी हो गए थे।

बेडरूम में कैमरे लगाने पर अड़ा प्रिंसिपल, पत्नी थाने पहुंची

बोली- कैरेक्टर पर सवाल उठाते हैं, बच्चों को कपड़े उतरवाकर बाहर खड़ा रखते हैं

इंदौर (एजेंसी)। इंदौर के निजी कॉलेज के प्रिंसिपल की पत्नी ने उनके खिलाफ प्रताड़ना और मारपीट की शिकायत दर्ज कराई है। महिला ने पुलिस को बताया कि पति बेडरूम में सीसीटीवी कैमरा लगाने की जिद कर रहा था। मना किया तो चरित्र पर सवाल करने लगा। फिर मारपीट कर घर से निकाल दिया। महिला अपने माता-पिता के साथ मंदसौर में रह रही है। लसूडिया पुलिस ने बताया, राखी श्रीवास्तव की शिकायत पर पति डॉक्टर प्रशांत श्रीवास्तव, ससुर राधेश्याम श्रीवास्तव, सास कल्पना और ननद मीनाक्षी पर केस दर्ज किया है।

महिला ने अपनी शिकायत में पुलिस को यह बताया...

मेरी शादी 7 जुलाई 2014 को प्रशांत श्रीवास्तव से हुई थी। शादी के बाद दो बेटे 9 और 3 साल के हैं। पिता ने शादी में सोने के जेवर, 4 लाख रुपए कैश, एक हुंडई कार दी थी। ससुराल के लोग कुछ दिन अच्छे से रहे।

इसके बाद उनके व्यवहार में बदलाव आ गया। सास-ससुर सामान्य बातचीत में अपशब्द कहने लगे। सास कल्पना ने पूरे परिवार के सामने कई बार बोला कि तुमसे शादी करके नाक कट गई। ऐसा लगता है अब घर छोड़कर जाना पड़ेगा या जहर खाकर मरना पड़ेगा। तुम्हारे पिता ने हमारी उम्मीदों के अनुसार दहेज नहीं दिया। पति कहते हैं कि अगर तुम्हें यहां रहना है तो अपने बच्चों का खर्चा माता-पिता से लाना होगा। ससुराल के लोग किसी चीज के खर्च के लिए रुपए नहीं देते। हर बात में माता-पिता से रुपए लाने की बात करते हैं। मानसिक प्रताड़ना के चलते सारी बातें अपने पिता को बताई। इस पर पिता ने रिश्तेदारों के माध्यम से ससुराल के लोगों को समझाने का काफी प्रयास किया।

बेड रूम में कैमरे लगाए, चरित्र पर उठाए सवाल

महिला ने पुलिस को बताया, पति की इंदौर में नौकरी थी तो सास-ससुर भी गुना से यहीं रहने आ गए। पति ने सास-ससुर और ननद के कहने पर घर में कैमरे लगवाए। जिसे अपने मोबाइल पर अटैच कर लिया। इसके बाद पति ने बेडरूम में कैमरा लगाने की बात कही। मैंने कैमरा लगाने से रोका और कहा कि इससे प्राइवेसी खत्म होगी। तो पति चरित्र पर उंगली उठाने लगे। कहते कि तू जान बूझकर कैमरे नहीं लगवाना चाहती।

ससुर बोले- तुम्हारी जरूरत नहीं

महिला ने बताया कि 9 सितंबर 2024 को सास और पति ने अपशब्द कहे। ससुर ने कहा, हमें तुम्हारी जरूरत नहीं। सास ने चरित्र को लेकर गलत बातें कीं। घर में अकेला छोड़ कर ननद मीनाक्षी के घर चले गए। पति, सास-ससुर कोई भी पूरी रात नहीं आया। ससुर और पति के मोबाइल पर 10 सितंबर को पिता ने मैसेज किया कि घर आओ, पर कोई नहीं आया। मैं पिता के साथ मायके जावरा चली गई। पति ने कहा कि हम तुम्हें नहीं रखेंगे। क्योंकि शादी उनकी मर्जी से नहीं हुई है। एक माह तक समझाया। वापस घर नहीं ले जाने पर पुलिस के पास पहुंचे।

एक माह में बंद हो गया एंटी लार्वा ड्रोन सर्वे

10 लाख खर्च कर डाले, अब पायलेट प्रोजेक्ट का हवाला, इंदौर में 500 के करीब डेंगू मरीज

इंदौर (एजेंसी)। शहर में इन दिनों डेंगू मरीजों की संख्या में तेजी से इजाफा हो रहा है। अक्टूबर के 18 दिनों में 100 से ज्यादा डेंगू के केस मिले हैं। इनके सहित इस साल मरीजों की संख्या करीब 500 हो गई है। डेंगू, मलेरिया पर नियंत्रण को लेकर प्रदेश में सबसे पहले एंटी लार्वा ड्रोन सर्वे इंदौर में शुरू किया गया था। इसे अन्य शहरों में कराने की तैयारी थी। इस बीच स्थिति ऐसी बनी कि एंटी लार्वा ड्रोन सर्वे एक माह का बिल 10 लाख हो गया। इस भुगतान के बाद बजट नहीं होने से उसे बंद कर दिया। अब विभाग द्वारा इसे पायलेट प्रोजेक्ट का हवाला दिया जा रहा है।इंदौर के रहवासी इलाकों में सबसे पहले एंटी लार्वा ड्रोन सर्वे शुरू किया गया था। दरअसल, बारिश में जब डेंगू मरीजों की संख्या बढ़ने लगी थी तो जुलाई में गुजरात की कंपनी को ड्रोन सर्वे कराने का ठेका दिया गया था। उस दौरान 131 मरीज थे। एंटी लार्वा ड्रोन सर्वे का मकसद यह था कि ऐसे स्पॉट्स जहां लार्वा को आइडेंटिफाई नहीं किया जा सकता, उसे ड्रोन से किया जाए। विभाग का मानना था कि इससे स्पॉट्स जल्द आईडेंटिफाई होंगे और लार्वा नष्ट करने में मदद मिलेगी।

पुस्तक समीक्षा

नृपेन्द्र अभिषेक नृप
समीक्षक

ग्राम्य जीवन की कहानी बयां करता 'अनबूझे सपने'

रोमिता शर्मा की पुस्तक 'अनबूझे सपने' सुंदर कहानियों का एक सुंदर गुलदस्ता है, जिसमें भारतीय ग्राम्य जीवन की धड़कन और उसकी विविधता को गहराई से उकेरा गया है। यह संग्रह हिमाचल प्रदेश के गांवों के जीवन, उनकी समस्याओं, संघर्षों, परंपराओं और सामाजिक संरचनाओं को वास्तविक और संवेदनशील दृष्टि से प्रस्तुत करता है। रोमिता शर्मा, जो कथा साहित्य में एक उभरता हुआ नाम हैं, ने इस पुस्तक में ग्रामीण समाज के निम्न और अतिनिम्न वर्ग के जीवन के मर्म को पकड़ने का सफल प्रयास किया है।

'अनबूझे सपने' की कहानियां मुख्यतः ग्रामीण परिवेश पर आधारित हैं। इन कहानियों में साधारण लोगों की जिंदगियों और उनके संघर्षों को केंद्र में रखा गया है। ये कहानियां गांवों की सामाजिक और सांस्कृतिक जटिलताओं को उजागर करती हैं, जहां पुरानी परंपराएं और मान्यताएं जीवन के हर हिस्से को प्रभावित करती हैं। इन कहानियों के पात्र साधारण होते हुए भी असाधारण हैं क्योंकि वे गांवों की असली आवाज को प्रस्तुत करते हैं। वे हीरू मजदूर की कठिनाइयों, मासिक धर्म के दौरान गोशाला में रहने वाली महिला के संघर्ष, संक्रमण रोग से पीड़ित शंकर सिंह की पीड़ा और गैर-बिरादरी में ब्याही लड़की के संघर्ष को दर्शाते हैं।

पुस्तक में पुरातन ग्राम्य संस्कृति का एक प्रमुख प्रतीक 'घराट' है। घराट, जो एक प्रकार की पनचक्की है, ग्रामीण जीवन की परंपराओं और जीविका का केंद्र था, लेकिन आधुनिकता के आगमन के साथ इसका महत्व और अस्तित्व धीरे-धीरे समाप्त हो गया है। 'घराट' ग्रामीण जीवन के उन साधनों और परंपराओं का प्रतीक है, जो अब इतिहास बनते जा रहे हैं। इसी तरह, पुलिया के नीचे रहने वाली भिखारिन, अंधविश्वासों और रूढ़िवादिता से जकड़े गांव की जीवनशैली को भी इंगित करती है। इन प्रतीकों के माध्यम से रोमिता शर्मा ने ग्रामीण जीवन की खोती जा रही धरोहर को फिर से जीवंत किया है।

इस संग्रह की कहानियों में ग्रामीण जीवन के कई पहलुओं को उजागर किया गया है, जिनमें गरीबी, पिछड़ापन, अंधविश्वास, और रूढ़िवादी परंपराएं प्रमुख हैं। इन कहानियों के पात्र अपने-अपने संघर्षों में जकड़े हुए हैं, जहां उन्हें समाज के साथ-साथ अपने भीतर के संघर्षों से भी जूझना पड़ता है। जैसे कि हीरू मजदूर, जो गरीबी और कठोर श्रम से जूझता है, या मासिक धर्म के दौरान समाज द्वारा बहिष्कृत महिला, जिसका संघर्ष उसके शरीर और समाज दोनों के साथ होता है।

रोमिता शर्मा की लेखन शैली सरल और प्रवाहमयी है। उनकी कहानियों में संवादों का इस्तेमाल पात्रों की भावनाओं और विचारों को उभारने में सफल रहता है। लेखिका ने हर कथा में कथानक को सहजता से प्रस्तुत किया है, जिससे पाठक बिना किसी रुकावट के कहानी में डूब जाता है। उनकी शैली में गहराई और सादगी का मेल है, जो पाठकों को ग्रामीण जीवन के अनछुए पहलुओं से परिचित कराता है।

रोमिता शर्मा ने ग्रामीण समाज के उन हिस्सों पर ध्यान केंद्रित किया है, जो अक्सर मुख्यधारा की साहित्यिक धारा से बाहर रह जाते हैं। उनकी कहानियों में नायक या नायिका के रूप में कोई महापुरुष या आदर्श चरित्र नहीं हैं, बल्कि वे साधारण गांववासियों की जिंदगी के अनकहे, अनसुने और अनदेखे हिस्सों को सामने लाते हैं। उनके पात्र गांव के हाशिये पर खड़े लोग हैं–मजदूर, भिखारी, बीमार और समाज द्वारा बहिष्कृत महिलाएं, जो अपने जीवन की जटिलताओं में उलझे हुए हैं।

'अनबूझे सपने' एक ऐसी पुस्तक है, जो न केवल ग्रामीण जीवन के संघर्षों को उजागर करती है, बल्कि पाठक को उस दुनिया में ले जाती है, जो आज के शहरी समाज से पूरी तरह से भिन्न है। यह संग्रह हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि आधुनिकता के नाम पर हम अपनी पुरानी परंपराओं और सांस्कृतिक धरोहरों से कितनी दूर हो चुके हैं। रोमिता शर्मा ने अपनी कहानियों के माध्यम से ग्रामीण जीवन की गहराई, उसकी संवेदनाओं और उसकी जटिलताओं को इस तरह प्रस्तुत किया है, जो पाठक के दिल को छू जाती हैं।

समीक्षक- नृपेन्द्र अभिषेक नृप
पुस्तक- अनबूझे सपने
कहानीकार- रोमिता शर्मा
प्रकाशन- रुद्र प्रकाशन, बुंदेलखंड
मूल्य-300 रुपये
पेज- 106

शान्ति

प्रभुनाथ शुक्ल

देवी मंदिर की परिक्रमा के दौरान उसने मुझे कई बार टोंका। उसके हाथ में झाड़ू थीं वह रोज मंदिर की साफ -सफाई करता था।

क्या नाम है तुम्हारा

जी ! राजू

कितनी उमर है।

जी! 35 साल

क्या करते हो...?

बस, साहब! इसी देवी मंदिर में साफ -सफाई करता हूँ। अच्छा ट्रस्ट की तरफ से नियुक्त हो, फिर लोगों से पैसा क्यों मांगते हो। तुम्हें तो मंदिर का ट्रस्ट वेतन देता होगा।

नहीं साहब! ट्रस्ट ने किसे रखा है हम नहीं जानते हैं। लेकिन हम जैसे कई लोग देवी माँ के परिसर की बराबर साफ-सफाई करते हैं। मंदिर के पास में रहता हूँ। 15 साल का रहा तभी बाप मर गया। माँ की बीमारी और घर का खर्च चलाने के लिए मातारानी के दरबार में आ गया और साफ -सफाई करने लगा। मुझे 20 साल हो गए साफ -सफाई करते।

मंदिर में झाड़ू क्यों लगाते हो। क्या तुम्हें और कोई दूसरा काम नहीं मिला।

मैं पढ़ा -लिखा नहीं हूँ साहब। मंदिर का कपाट तीन बजे भोर में खुल जाता है। देवी दरबार की सफाई करने के बाद पूजा में शामिल होता हूँ। फिर प्रसाद लेकर सफाई में लग जाता हूँ। दोपहर कपाट बंद होने के बाद चला जाता हूँ।

कितना कमा लेते हो ?

बस ! मातारानी की जितनी कृपा हो जाए। कमाने की बात नहीं है सबसे बड़ी बात माँ के दरबार में सफाई और सेवा से मुझे आनंद मिलता है। इसी बहाने मातारानी के आशीर्वाद से मेरा परिवार चल रहा है। यहाँ से मुझे शान्ति मिलती है। राजू की बात सुन मैं आश्चर्य से भर गया था। उसे 50 रुपए की नोट देते हुए मैं आगे बढ़ गया था। सच में मातारानी सबकी झोली भरती हैं।

कविता

हाइकु

वाह ! जलेबी

यशवंत चौहान

अच्छे दिन आयेंगे
आह ! जलेबी
रस भरा है
तुझमें व उनमे
बाक़ी बेरस

मैं ग़रीब था
कल तक मेरी थी
तू कहाँ गयी ?

मिठाई है या
है जान की दुश्मन
है उलझन

राजनीति में
तेरा स्वाद अलग
वाह ! जलेबी

पता नहीं था

लघुकथा

करवाचौथ

अविनाश अग्निहोत्री

चार चार स्पेशलिस्ट डाक्टरों के रिपोर्ट देखकर इलाज से मना करने के बाद।अब तुम्हें क्या लगता है कि तुम्हारा ये उपवास मेरी उम्र बढ़ा सकता है।

चलनी की आड़ से उसे निहारती अपनी पत्नी को देख,मायूस अमर बोला।

तब अनु बोली आपका यूं निराश होना ठीक नही।पहले भी कई लोग इस बीमारी से ठीक हुए है।आपको बस अपना आत्मविश्वास बनाए रखना चाहिए।नियति का फैसला जो भी हो प्रयास हमें आखिरी दम तक करना चाहिए। फिर आज मैं उस डॉक्टर से आपके लिए प्रार्थना कर रही हूं जिसके लिए असंभव कुछ नही।

और फिर आपको यह भी कभी नही भूलना चाहिए कि मेरा भी नाम अनुसूया है।

इतना कहते हुए वो अपने पति का हाथ कसकर पकड़ आसमान में निकले चांद को निहारने लगी।

(लघुकथा)

जूस

सुरेश सौरभ

क्या बात मैडम जी! आज लेट कर दिया?-क्लर्क
जरा तबीयत न ठीक थी-मैडम
अरे! क्या हुआ आपको ?- क्लर्क
ओह! अब आई, क्या हुआ मैडम जी?-साहब
सर! तबीयत न ठीक थी, इसलिए आज लेट हो गई।
क्या हुआ ? -साहब
मैडम खामोशी से अपनी सीट की ओर बढ़ गईं।
रामू मैडम ने चपरासी रामू को आवाज दी।
जी जी ! मैम रामू आ गया।
जरा एक गिलास अनार का जूस ले आओ, कुछ तबीयत

ठीक नहीं, वहीं से
लाना जहाँ से लाते हो?
क्लर्क की डेस्कटॉप से आंखें हटीं, कीपैड पर नाचती उंगलियाँ ठहरीं।अब उसकी निगाह रामू पर थीं। रामू उन्हें देख मुस्कुराया, तब हल्की हंसी में क्लर्क बोला-जाओ यार! ले आओ जल्दी!
अभी जाता हूँ सर।- मैम से पैसे लेकर रामू शरारती मुस्कान लिए आगे बढ़ गया। मैडम ने कनखियों से उसे देखा, फिर दुरदुराते हुए उनकी उंगलियाँ कीपैड पर तेज से, तेजतर हो गईं। डेस्कटॉप थरथराने लगा।

लघुकथा

डॉ. यशोधरा भटनागर

चाँद

आसमान में इक्का-दुक्का बादल अभी भी छाए हुए थे।गोटा लगी रेशमी लाल साड़ी पहने सोलह श्रृंगार कर,आँगन में खड़ी वह वह एकटक आसमान की ओर देख रही थी।

यह चाँद तो दिख जाएगा न आज? मेरा चाँद तो दूर बर्फीले क्षेत्र में तैनात,मन ,वचन कर्म से अपना फ़र्ज़ पूरा कर रहा है। पर अग्नि को साक्षी मान,सात वचन दे मुझे भी तो अपनी अर्धांगिनी बनाया है।नहीं! उसका पहला प्यार तो देश के लिए है और अब वह भी उसी के रंग में रंग गई है।

उसने फिर आसमान की ओर देखा। बादलों की ओट से चाँद मुस्कुराया। खनखनाती चूड़ियों और पायल की रुनझुन का संगीत आँगन में फ़ैल गया। चाँद को अर्ध्य दे उसकी नम आँखें छलनी के उस पार अपने रोहण को खोजने लगीं।

हृदय विकल हो उठा और आँखों में सिमटी नमी झरने लगी।हाथ में फोन उठाया पर ऊँहह उसका फौजी नेटवर्क में ही कहाँ रहता है?

'मीनू एक वादा करो तुम कभी उदास नहीं होगी। देखो न मैं तुम्हारी आँखों में ही तो रहता हूँ।' पिछली बार रोहण ने ड्यूटी पर लौटते समय उसकी मीन सी आँखों में झाँकते हुए उसका हाथ थाम उससे वादा लिया था।

आँसू पोंछ आईने के सामने खड़ी हो रोहण को दिया वादा पूरा करने की असफल कोशिश रही थी।

तभी हवा सरसराई और विंड चाइम का मधुर स्वर उसके अंतर में उतर गया।

'लव यू रोहण! लव यू!' आकाश से झरती बूंदें उसके सूखे अधरों को नम कर रहीं थी।

दो कविताएँ

राजकुमार कुम्भज

1. मैं आदमी नहीं, शीशा हूँ

मैं आदमी नहीं, शीशा हूँ
ये सच्चाई सिर्फ़ तब ही समझ पाया
जब-तब सच्चाई के लिए सर उठाया
और पत्थर से टकराया
जबकि घर जैसा कोई घर नहीं था
और मैं एक ख़ुशनुमा घर में था
जबकि डर जैसा कोई डर नहीं था
और मैं कमबख़्त एक डर में था
जबकि जैसा इधर था वैसा ही उधर था
और मुझे पता नहीं किधर था?
पता नहीं, था भी या नहीं था?
फिर भी कहीं न कहीं था ज़रूर
ज़रूरी चीज़ें जमा करता हुआ
ज़रूरी चीज़ों के लिए लड़ता हुआ
और ये कहता हुआ कि लड़ूँगा अंत तक
हर किसी जीवन में वसंत तक
हर वक़्त में आएगा आने वाला
हर वक़्त में गाएगा गाने वाला
कि सच्चे का बोल बाला
और हरेक झूठे का मुँह काला
मैं आदमी नहीं, शीशा हूँ.

2. कहते नहीं थकते हैं वे

कहते नहीं थकते हैं वे
कि जैसे भी हो, जैसे भी हो, जब भी हो
जल्द ही होगी, उनकी ही सरकार होगी
रोटी, कपड़ा, मकान हो, न हो, हर्ज़ नहीं
घर-घर में बम, बारूद, तलवार होगी
धोबी को दूध धोने की,
मगरमच्छों को रोने की,
कुत्तों को भौंकने, लोहार को भट्टी झोंकने की
सर्व-धर्म-समभाव से खुली आज़ादी होगी
नंगे राजा की नंगा न कहने की मुनादी होगी
कहा जाएगा कि डरो तो डरना होगा
कहा जाएगा कि मरो तो मरना होगा
कहते नहीं थकते हैं वे.

कहानी

केदार शर्मा

साझी दीवार

सूरज और रवि दोनों पड़ौसी थे। उनके दोनो के मकानों के सामने दोनो के बरामदों को विभाजित करती एक मिट्टी की दीवार थी। पहले दोनो के मकान कच्चे थे। सूरज की दादी और रवि की दादी सहेलियां थीं। दोनों ने अपने-अपने पुश्तैनी मकानों की घिचपिच को छोड़कर गाँव के बाहर पास-पास में ही प्लॉट लिए थे और कच्चे घर बनवा लिए थे।

रवि ने तीन साल पहले ही अपना मकान पक्का बनवा लिया था। सूरज ने अब बनवाया है,लेकिन उसने वैसा ही नक्शा बनवाया जैसा रवि ने बनवाया था,यहाँ तक कि रंग-रोगन,खिड़की-दरवाजे,फर्श की टाइलें सब हूबहू थे।

जब मकान का काम पूरा होने लगा तो एक सुबह सूरज ने सोचा,क्यों नहीं दोनों के बरामदों के बीच की इस मिट्टी की दीवार को भी पक्की कर दी जाए। हालाकि दीवार पुती हुई थी और सुंदर मांडणों की चित्रकारी से सजी हुई थी। सूरज ने मजदूरों को बुलाकर वह दीवार ढहा दी। आवाज सुनकर रवि और बच्चे बाहर निकल आए। सारी बात रवि के समझ में आ गई कि मजदूर दीवार का मलबा हटाकर नींव खोदना शुरू करने वाले हैं।

रवि तुरतं वहाँ जा पहुंचा और बोला-'ये क्या हो रहा है सूरजजी ? मुझसे पूछा तो होता। दीवार क्या इतनी बुरी लग रही थी ?' उसके स्वर में आक्रोश था।

'देखो रविजी,पक्के मकानों के बीच यह कच्ची दीवार क्या अच्छी लग रही थी ?'

'देखिए सूरजजी,माना कि वह दीवार बुरी लग रही थी,पर आपको मुझसे चर्चा तो करनी चाहिए थी। चाहता तो मैं भी इस दीवार को कभी का गिराकर पक्की बनवा सकता था। और वैसे भी इसकी सार-संभाल हम ही कर रहे थे।'

रविजी,जब से होश संभाला है,मैंने मेरी मां को उस दीवार की लिपाई-पुताई करते और उस पर सुन्दर मांडणे बनाते देखे हैं।' सूरज ने भी उसी लहजे में जवाब दिया ।

दोनों के बीच जब बहस तेज हो गई तो मौहल्ले के बड़े-बूढ़े और बच्चे वहां इकट्ठे हो गये। एक वृद्धा ने गला साफ किया और बोली -' बेटा,जिसने यह दीवार बनाई

है वह शख्स इस समय जीवित है। वह बता सकता है कि यह दीवार किसकी है। वृद्धा के बताए गए पते पर किसी बच्चे को भेजकर उस दीवार की चिनाई करने वाले मिस्त्री को बुलवाया गया।

लकड़ी टेकता हुआ वह वृद्ध मिस्त्री आ खड़ा हुआ। जब वह बोलने लगा तो सभी की आँखें उत्सुकता से उस वृद्ध पर टिक गई -''मैनें ही इस दीवार की चिनाई की थी। बात तब की है जब सूरज पाँच साल का था और रवि का जन्म भी नहीं हुआ था। दोनों परिवारों की महिलाओं में ऐसा मेल था जैसे दाँत-कटी रोटी खाती हों। रवि के पिताजी ने दो दूध देती गाँएं और एक कुत्ता पाल रखा था। दोनो बछड़े और कुत्ता आँगन में छलांगे लगाते फिरते थे। ऐसे ही एक दिन एक बछड़ा सूरज को रौंधता हुआ निकल गया। उसके नाक से खून बहने लगा। उधर कुत्ते का भी भरोसा नहीं किया जा सकता था। इसलिए दोनों परिवारों ने तय किया कि दोनों मकानों के बीच एक कच्ची दीवार उठा दी जाए ताकि छोटे बच्चे के साथ कोई अवांछित घटना नहीं घटे। दीवार बन जाने बाद दोनों परिवारों ने 50-50रूपए मजदूरी के दिए थे। तय हुआ था कि यह दीवार दोनों के लिए साझी रहेगी। वृद्ध मिस्त्री के मुँह से सारी बात सुनकर दोनों के सामने सारी स्थिति स्पष्ट हो गई। लोगों के समझाने पर दोनो परिवार अपने-अपने काम में लग गए,पर दिन-भर एक दूसरे से बात नहीं की। शाम को खाना खाने के बाद रवि की पत्नी सुजाता ने रवि से कहा–'सुनोजी,यह दीवार सूरजजी भाईसाहब को ही पक्की करने दो,आधा खर्चा देंगे तब भी रहेगी तो बीच में ही।'

'ठीक है, यह बात कल सवेरे उनको बता दूंगा'-रवि ने संक्षिप्त जवाब दिया। उधर सूरज की पत्नी भी सूरज को समझाने लगी-'देखोजी,'कच्ची दीवार जब हमने गिरा ही दी है तो उसे पक्की करने की क्या जरूरत है ।जब हमारे मनों में कोई दीवार ही नहीं है तो इस दीवार की क्या जरूरत हे ?'

'लेकिन अगर रवि इस बात से सहमत नहीं हुआ तो ?' सूरज ने शंका जताई। 'तो बना लेंगे वे,पूरी दीवार उनकी रह जाएगी। रहेगी तो बीच में ही।'

''ठीक है कल मैं रविजी से कह दूंगा।'

दूसरे दिन सुबह मिस्त्री दीवार की उस खाली जगह में बाकी दोनों ओर के फर्श जैसी टाइले लगाने की तैयारी कर रहा था। सूरजजी पास ही खड़े थे। रवि ने कहा–'भाईसाहब, यदि यह दीवार आप चाहें तो पक्की करवा लें। अब हमें तो कोई आपत्ति नहीं है।' कल की बात के लिए मैं माफी चाहता हूं।

'देखिए रविजी, यदि हमारे मनों में कभी दीवार नहीं रही और न ही इस समय है,तो इस बाहरी कच्ची दीवार को पक्की करके क्या करेंगे। हाँ, मन में उठी मालिन्य की दीवारें यदि कच्ची होती तो बाहरी दीवारों को पक्की करना तर्कसंगत होता। किसी समय एक छोटे बच्चे की पशुओं से रक्षा के लिए हमारे पूर्वजों को इस दीवार की आवश्य कता हुई थी,किसी मनभेद के चलते नहीं। अब अगर यह ढह ही गई है तो इसे और उठाने की अब जरूरत ही क्या है' कहकर सूरज मौन हो गया।

दोनो हाथ जोड़कर रवि बोला-'सूरजजी भाईसाहब, आप बिल्कुल सही कह रहे हैं। सौ समझदार आदमी भी छोटी सी जगह में आसान रह सकते हैं परतुं दो अनगढ़ व्यक्ति बहुत बड़ी इमारत में भी लड़े बिना, सुकून से नहीं रह सकते। दीवार के टूटने से आँगन भी कुछ बड़ा लगने लगा था । बच्चे दोनो ओर निर्बाध रूप से आर-पार छोटी साईकिले घुमा रहे थे और आँगन मुस्करा रहा था।

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मध्यकालीन भारतीय कला और अस्तित्व की लड़ाई

मध्यकाल के भारत में कृतियों पर संकट के बादल तो खूब दिखे, कलाकारों को खूब संघर्ष करना पड़ा, कृतियों को भी अस्तित्व की लड़ाई लड़नी पड़ी जो आगे भी जारी रही जिस पर विस्तार से लिखा जाना शेष है, फिर कभी चर्चा करूँगा। फिलहाल आधुनिक कलाकारों एवं कृतियों पर चर्चा का इरादा है। अंग्रेजी सत्ता के आने से कलाकार जो एक जगह रुक कर कार्य कर रहे थे सब तितर-बितर हो गये। कला शैलियाँ भी आपस में मिल सी गईं। कोई कलाकार पटना पहुँच गया तो कोई बंगाल पहुँच गया। खिचड़ी सी शैली पनपी उस बीच। कलाकार खुल कर अभिव्यक्ति भी नहीं कर पा रहे थे, अंकुश अधिक था जो धीरे-धीरे समय के साथ खुला तो पर अंग्रेजी हुकूमत और शैलियों के लेप के साथ। कलाकार जो स्वाभिमानी थे, अपने शर्तों पर कार्य करना चाहते थे, धीरे-धीरे चित्रों से दूरी बना लिए। जो खुद को समय के साथ ढाल लिए दूर तक चल सके। पटना कलम कुछ ऐसे ही अस्तित्व में आई। अब तक दरबारी चित्रकारी का तमगा भी गायब सा ही हो गया था। कलाकारों को जब रोजी-रोटी का संकट सताने लगा तो वे अपने मार्ग ही बदल लिए फलतः बीच में काफी समय तक कलाकृतियाँ मिलती ही नहीं है। रिक्तता सी दिखाई पड़ती है उस दौर में। अंग्रेजों के शासनकाल में जब तमाम जगहों पर कला विद्यालय खोले जाने लगे उसके बहुत समय बाद से फिर धीरे-धीरे कृतियाँ नजर आने लगती हैं और आगे तो आधुनिकता के आकाश में आते ही सारे बंधन टूट जाते हैं और भारतीय कलाकार वैश्विक स्तर पर अपनी अलग पहचान रखने लगे हैं।

भारतीय कला का इतिहास तो अथाह है, जहाँ तक हम सबने थाह पाया है वो पूरे का बस कुछ प्रतिशत ही है कारण भारत के सभी कलाकारों को तथा उनके कला को समझ पाना असंभव है। सभी कलाकारों तक हम पहुँच भी पाएंगे शायद ही सोचा जा सकता है। बहुत-बहुत कुछ छूट गया है खैर हम बात करेंगे इधर बीच की कला पर या कला में आधुनिकता पर। प्रागैतिहासिक, अजंता, एलोरा, खजुराहो, मध्यकालीन पोथी चित्र, राजस्थानी, पहाड़ी, मुगल कला के रास्ते हम आधुनिक भारतीय कला तक का सफर तय करते हैं, उतार-चढ़ाव भी देखते हैं। यहाँ तक पहुँचते-पहुँचते भारतीय कला पंगुता को प्राप्त कर चुकी थी कारण वही परतंत्रता का दंश ही था। कुछ कलाकारों को छोड़ दिया जाय तो शायद ही कोई कलाकार रहा हो जो स्वतंत्रता विषयक चित्र बनाया हो जिसे देखकर जनता में आक्रोश फूटा हो। सौंदर्य एवं प्राकृतिक विषयक कृतियां शबीह और पक्षियों तक सीमित हो चुके थे। ये सब भी बस मुगल तक ही रहा। मुगल साम्राज्य के पतन के साथ ही आश्रय के खोज में भटकते कलाकार अपने कला और कल से भी भटक गये। उसके बाद कला की छिटपुट गतिविधियां दिखती तो हैं पर निरंतरता, स्पष्ट विवेचनीय कार्य देखने को नहीं मिलता। हालांकि हमारे कलाकारों में पूरी काबीलियत थी जिसका बढ़िया उदाहरण जहाँगीर के समय में तैयार एक यूरोपीय कृति की कई अनुकृतियाँ रहीं जहाँ मूल कृति को पहचान पाना मुश्किल हो उठा, पर कलाकारों को सृजन हेतु मानसिक मजबूती के लिए पर्याप्त माहौल नहीं मिल सका। भारतीयों के प्रति अंग्रेजों के दूषित रवैये ने कुछ समय के लिए भारतीय कला को पटल से गायब ही कर दिया था।

कलाकृतियाँ निर्मित तो नहीं हो पा रहीं थीं पर कुछ कलाकार जो कायदे का आर्थिक लाभ भले नहीं प्राप्त कर पा रहे थे फिर भी लगे हुए थे। भटकते हुए कलाकार बिखर गये और कई अलग-अलग जगह रहने लगे। किसी न तैर सकने वाले को बीच मझधार में छोड़ देने पर जो हाल होता है कुछ वही हाल था भारतीय कलाकारों का पर भारतीय कलाकारों ने डूबने के बजाय संघर्ष करना जारी रखा। इन सभी से अलग राजा रवि वर्मा अपने सृजन में रमें रहे। वर्मा के कृतियों में कई सारी खूबियाँ एक साथ देखी जा सकती है। वैचारिक स्वतंत्रता का जबरदस्त प्रतिफल इनके कृतियों में नजर आता है। बहुत कुछ था जो उस समय भी काफी था कला के नाम पर। उधर अंग्रेजी अधिकारी भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से भी प्रभावित नज़र आ रहे थे फलतः छिटपुट कलाकारों से यहाँ के संस्कृतियों को उजागर करती कृतियाँ बनवाते और अपने यहाँ भेजवा कर व्यापारिक लाभ भी प्राप्त कर रहे थे। अंग्रेजों द्वारा तमाम परिवर्तन के साथ ही मद्रास(1850), कलकत्ता(1854), बंबई(1857), लाहौर(1875), लखनऊ(1913) जैसे जगहों पर कला के भी विद्यालय खोले गए जहाँ भारतीयता तो नदारद थी ही तकनीक भी यूरोपियन थी। भारतीय रहन-सहन, खान-पान, व्यापार, उद्योग आदि के साथ ही भारतीय कला पर भी अंग्रेजों का प्रभाव तो पहले से ही था जो दिन-ब-दिन बढ़ रहा था पर इन विद्यालयों के स्थापना के बाद अब पश्चिमी सभ्यता को व्यवस्थित तरीके से यहाँ के कला छात्रों विशेष कर धनाढ्य वर्ग के छात्रों में भरा जा रहा था, जहाँ अप्रत्यक्ष तौर से भारतीय कला को पश्चिमी कला से तुच्छ बताए जाने की कोशिश भी हो रही थी। हालांकि अधिकतर अंग्रेज जो खुद को ज्ञानी समझ रहे थे और अपने यहां के ज्ञान, ध्यान को विशेष मान रहे थे को भी यह अंदेशा था कि भारतीय कला, संस्कृति एवं साहित्य किसी भी मायने में यूरोपीय दर्शन साहित्य आदि से कम नहीं है फिर भी सत्ता की हनक कहें या भारतीय जनता के बिखराव का प्रतिफल कि अंग्रेजों द्वारा अजंता, एलोरा आदि जहाँ शैली, सौंदर्य, विषय संबंधी संपन्नता सदियों से विराजमान रही है, को कमतर दिखाने का प्रयास लगातार किया जाता रहा। लोगों में धीरे-धीरे ये बात भरी जाने लगी थी कि आगे बढ़ने हेतु अंग्रेजी तकनीकी एवं शिक्षा बहुत ही जरूरी है। कला भी इससे इतर नहीं रह सकी। भारतीय छात्रों के कृतियों में भारतीयता नदारद दिखने लगी, पाश्चात्य पाठ्यक्रम का असर दिखना प्रारंभ हो गया, छात्र कलाकार कम मशीन ज्यादा बनने लगे, जिसका कमांड किसी और के हाथ में होता था। छात्र भारतीय और पाश्चात्य के बीच पेंडुलम से झूल रहे थे तथा हार मान कर उनको ही सही मान ले रहे थे जबकि भारतीय कला के बारे में अंग्रेज शिक्षक भी बहुत ज्यादा जानकार नहीं थे या कह सकते हैं कि खुद के गढ़े-गढ़ाए विचारों के मद्देनजर या अपने ज्ञान आधारित चश्में के साथ भारतीय कलाकृतियों को देख और समझ रहे थे, छात्रों को भी वही समझाने की कोशिश में थे। भारतीय कला में पाश्चात्य के आने से नुकसान तो हुआ पर भारतीय छात्रों को काफी कुछ नया सीखने को भी मिला। ब्रिटिश रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट के शैलीगत विशेषताओं पर आधारित कला शिक्षा में भारतीय छात्रों को पर्सपेक्टिव, लाइट एंड शेड, एनॉटॉमी जैसे बारीकियों के साथ ही ऑयल पेंटिंग की टेक्नीक पर भी काम करने और सीखने का मौका मिला। अपना और अपने कला के भविष्य को लेकर, प्रसिद्धि को लेकर कुछ उत्साहित युरोपीय कलाकार भी भारत आये। जिसमें जोहान जोसेफ ज़ोफ़नी जो जर्मन नवशास्त्रीय चित्रकार थे, कलाकार केटल जो ईस्ट इंडिया कंपनी के साथ 1768 में मद्रास आए और वहीं रहते हुए कृतियों का निर्माण करते रहे बाद में कलकत्ता भी गये, प्रसिद्ध ब्रिटिश चित्रकार होजेस, विलियम डैनियल जो समुद्री चित्रकार थे अपने परिचित थामस डेनियल के साथ भारत आए और खूब यात्राएं की, कृतियों का निर्माण भी किया, आलेख के साथ चित्र थॉमस डेनियल का बनाया ही है। प्रसिद्ध पोट्रेट कलाकार एवं रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट के संस्थापक तथा पहले अध्यक्ष सर जोशुआ रेनाल्ड्स, कवि और उपन्यासकार जो बाद में शौकिया चित्रकारी भी करने लगीं एमिली ईडन जैसे लोग भारत के कला परिदृश्य पर उपस्थित हुए और अपने अनुरूप चीजों और कृतियों को ढालते हुए सीखने-सिखाने के उपक्रम के साथ आगे बढ़ते रहे।

बाद में जॉन ग्रिफिथ्स और जॉन लॉकवुड किपलिंग भी भारत आए और जल्दी ही ग्रिफिथ सर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट के प्रमुख बन गए जिनका योगदान भारतीय छात्रों हेतु काफी रहा। जबकि किपलिंग को लाहौर स्कूल का प्रमुख बनाया गया।

छात्र तकनीकी रूप से प्रबल तो हो रहे थे पर दुख इनके भीतर से गायब होते भारतीयता से था। एक से बढ़कर एक संपन्न कलाकृतियों वाले देश के छात्र अपने पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे, वे अपने कृतियों को श्रेष्ठ मान सकने से पूर्व ही भ्रमित हो जा रहे थे। उधर वैश्विक स्तर पर भी बहुत कुछ उथल-पुथल हो रहा था। कई देशों में आधुनिकता के नाम पर कला में तमाम प्रयोग हो रहे थे। कलाकार स्वतंत्र होकर यथार्थवाद, प्रभाववाद, उत्तर प्रभाववाद सहित और भी कई वादों में मगन थे जबकि यहाँ बहुत कुछ होना शेष था। समय के साथ पश्चिम और पूरब के बीच सामंजस्य भी देखने को मिलने लगा था तकनीकी ज्ञान के साथ ही भारतीय भाव, विषय का मिलान तत्कालीन छात्र एवं कलाकार धीरे-धीरे करने लगे थे। अजंता जैसे भारतीय थाती के कलाकृतियों के नकल हेतु कला विद्यालयों से टीम जाने लगी थी जिसमें शिक्षक और विद्यार्थियों का समूह होता था जो कृतियों के समक्ष बैठकर उनके नकल तैयार करते थे और संस्थाओं में संग्रहित करते थे उस पर लगातार अध्ययन करते थे। बाद में समय बदलने लगा और दबे रूप में ही सही पर कुछ कलाकार ऐसे भी थे जो तकनीक तो सीखते थे पर करते अपनी ही मनमानी थे फलतः युरोपीय प्रभाव वाले बोझ से खुद को अलग कर सके कुछ ऐसे भी थे जो इन सभी से अलग कुछ नया करना चाह रहे थे और अपने रास्ते पर चलते हुए नया कर भी रहे थे जबकि कुछ बिना किसी संस्थान में गये ही अपने बलबूते अपने कृतियों के माध्यम से अपनी पहचान बना रहे थे। यही वजह है कि राजा रवि वर्मा का नाम संस्थानों से अलग खुद एक संस्थान के रूप में लिया जाता है।

रीवा एयरपोर्ट लोकार्पण पर विशेष

विन्ध्य की उड़ान को लगे सुनहरे पंख!

राजेन्द्र शुक्ल

लेखक मध्यप्रदेश के उप मुख्यमंत्री हैं

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जब कहते थे कि वह दिन भी अब दूर नहीं जब हमारे देश के 'हवाई चप्पल वाले लोग भी हवाई जहाज में उड़ान भरेंगे' तब विरोधी इसे महज जुमला कहकर बात हवा में उड़ा देते थे। ऐसे लोगों को आज रीवा आकर देखना चाहिए कि सपना किस तरह यथार्थ के धरातल पर उतरकर चरितार्थ होता है।

20 अक्टूबर 2024 की तारीख विन्ध्यक्षेत्र के लिए ऐतिहासिक और अविस्मरणीय बनने जा रही है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदीजी चिरप्रतीक्षित रीवा हवाई अड्डे का लोकार्पण करने जा रहे हैं। इस अवसर पर लोकप्रिय मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव, रीवा के प्रभारी मंत्री श्री प्रह्लाद सिंह पटेल साथ ही विन्ध्य के सांसद-विधायक गण, उद्यमी व नागरिक गण हवाई अड्डे पर आयोजित गौरवमयी ऐतिहासिक समारोह के साक्षी रहेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी रीवा में एक ऐसे हवाई अड्डे को लोकार्पित करने ने जा रहे हैं जो भविष्य में उत्तरमध्य भारत का सबसे महत्वपूर्ण एयर ट्रैफिक डेस्टिनेशन बनकर उभरेगा ही इस क्षेत्र को विकास के उच्च पायदान पर स्थापित करेगा। औद्योगिक निवेश और पर्यटन के लिए वैश्विक संभावनाओं का पथ प्रशस्त होगा।

दो वर्ष पूर्व इंदौर में आयोजित ग्लोबल इनवेस्टर्स मीट में विश्वभर के उद्यमियों के बीच माननीय ज्योतिरादित्य सिंधिया जी(तत्कालीन नागरिक विमानन व उड्डयन मंत्री) ने सगर्व यह घोषणा की थी कि हम मध्यप्रदेश का छठवे हवाईअड्डे को निर्मित और विकसित करने जा रहे हैं। उनकी इस घोषणा ने दुनियाभर के उन उद्योगपतियों के ध्यान को आकृष्ट किया जो यहाँ पावर व माइनिंग सेक्टर, वाइल्ड लाइफ टूरिज्म, फूड प्रोसेसिंग इन्डस्ट्रीज की संभावनाओं को देखते हैं। शिक्षा व स्वास्थ्य क्षेत्र में निवेश करने वालों के लिए यह अवसरों का दरवाजा खोलने वाला है। यह सुयोग है कि 23 अक्टूबर को रीवा में विन्ध्य में इन्वेस्टर समिट और रीजनल इन्डस्ट्रियल कान्क्लेव का आयोजन है। यह हवाई अड्डा विन्ध्यक्षेत्र के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से एक्सीलेटर की भूमिका निभाएगा यह मेरा दृढ़ विश्वास है।

मुझे यह बताते हुए हर्ष हो रहा है कि रीवा का हवाईअड्डा कई चरणों में विकसित हो रहा है। प्रथम चरण में 72 सीटर यात्री विमान के उड़ान की सुविधा प्रारंभ हो रही है। पाँच साल में रीवा का हवाईअड्डा बोइंग की लैंडिंग और अन्तर्राष्ट्रीय उड़ानों के लिए बनकर तैय्यार रहेगा। वह दिन दूर नहीं जब यहां से विदेशों के लिए भी हवाई जहाज उड़ने लगेंगे।

रीवा एयरपोर्ट शिलान्यास के बाद रिकॉर्ड समय में बनकर तैयार हुआ है, इस उपलब्धि के लिए भारतीय विमान प्राधिकरण व स्थानीय प्रशासन अभिनंदन का पात्र है। हवाई यातायात की सुविधा की दृष्टि से रीवा

अब भोपाल, इंदौर, ग्वालियर, जबलपुर, खजुराहो की श्रेणी में आकर खड़ा हो गया है। भविष्य में हम और भी आगे बढ़ेंगे।

देश में मोदी जी और प्रदेश में डा. मोहन यादव के कुशल और फलदायी नेतृत्व के अनुभव को देखते हुए मैं यह विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि अगले पाँच वर्षों के भीतर हम-सब का सपना पूर्णरूपेण यथार्थ के धरातल पर उतर जाएगा। यह विन्ध्य की आशाओं के केन्द्र रीवा के विकास का श्रेष्ठ व उन्नत दौर है जो स्वतंत्रता के अमृतकाल में प्रारंभ हो हुआ है।

मैं जब कहता हूँ कि अब रीवा मध्यप्रदेश के ही नहीं देश के समुन्नत और श्रेष्ठ महानगरों की श्रेणी में कदमताल मिलाकर चल पड़ा है तो इसके पीछे ठोस आधार है। 1956 तक रीवा विन्ध्यप्रदेश की राजधानी रहा है और तब इसकी हैसियत भोपाल, लखनऊ, पटना और भुवनेश्वर जैसे शहरों के समकक्ष थी। कांग्रेस सरकार ने राजनीतिक द्वेषवश रीवा से एक प्रदेश की राजधानी का गौरव छीन लिया।

1956 से 2004 तक यह उपेक्षित और अभिशप्त पड़ा रहा। विन्ध्य में आज जो प्राकृतिक संसाधन हैं वो कल भी थे। आम नागरिकों में विकास की ललक और अपेक्षाएं कल भी वैसी ही थीं। केन्द्र में अटलजी और उसके बाद मोदीजी की नेतृत्व की व प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान और अब डा.मोहन यादव के नेतृत्व वाली भाजपा सरकार ने आहत और उपेक्षित विन्ध्यवासियों की पीड़ा और भावनाओं को समझा है। आज यह क्षेत्र कई मामलों देश में अग्रगण्य है।

जब मैं कहता हूँ कि रीवा एयरपोर्ट उत्तरमध्य भारत का सबसे महत्वपूर्ण एयरपोर्ट होगा तो मेरी दृष्टि के सामने सिंगरौली का पावर काम्प्लेक्स उभरकर सामने आता है। सिंगरौली में थर्मल प्लांटस में 20,000 मेगावाट से ज्यादा विद्युत उत्पादन होता है। देश का यह सबसे बड़ा पावर काम्प्लेक्स है। रीवा इंदौर की तर्ज पर आगे बढ़ रहा है। शहरी विकास की रेटिंग एजेंसियां रीवा को संभावनाओं का महानगर बता रहे हैं। इन्हीं सबके आधार पर मैं यह कहता हूँ कि रीवा एयरपोर्ट विन्ध्य के उन्नत उडान के लिए स्वर्णिम पंख लगाने जा रहा है। रीवा एयरपोर्ट के फलितार्थ होने में भी परिश्रम की पराकाष्ठा शामिल है। मैं आभारी हूँ तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज जी का, मुझे वह तारीख 13 जनवरी 2015 आज भी याद है जब उन्होंने सिविल एविएशन मिनिस्ट्री को रीवा में एयरपोर्ट की संभावनाओं के अध्ययन के लिए पत्र लिखा। इसके बाद वह सिलसिला चल निकला। प्रधानमंत्री जी ने किफायती दरों वाली उडान योजना लांच की तो उन्हीं की कृपा से रीवा 'उडान' में शामिल हो गया। सिंधिया जी ने जब से उड्डयन विभाग की कमान सँभाली रीवा एयरपोर्ट उनकी प्राथमिकता में सर्वोपरि रहा। एयरपोर्ट अथॉरिटी ने प्रदेश सरकार से कहा कि हमें रीवा के लिए 258 एकड़ भूमि और चाहिए। मुख्यमंत्री जी ने बिना वक्त गँवाए इसके लिए 209 करोड़ रुपये उपलब्ध करा दिए। जब जनसेवा का भाव और संकल्प प्रबल होता है तब दैवयोग से सभी कार्य ऐसे ही सधते जाते हैं जैसे कि रीवा एयरपोर्ट की कल्पना और उसे अब यथार्थ के धरातल पर उतरते हुए देखना। मैं विन्ध्यजनों की ओर से, रीवा के नागरिकों की ओर विनयवत हूँ, आभारी और कृतज्ञ हूँ।

चकाचौंध के बीच गायब होता पारंपरिक महत्व

करवा चौथ

आकाश वर्मा

भारत मे करवा चौथ विवाहित महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला एक पारंपरिक त्यौहार है, जो मुख्य रूप से उत्तर भारत में हिंदू संस्कृति में निहित है। यह एक ऐसा दिन है जब पत्नियाँ सूर्योदय से लेकर चाँद निकलने तक उपवास रखती हैं, अपने पतियों की लंबी उम्र, स्वास्थ्य और समृद्धि के लिए प्रार्थना करती हैं। यह त्यौहार बहुत उत्साह के साथ मनाया जाता है, जिसमें अनुष्ठान, सुंदर पोशाक और भक्ति की भावना होती है, विवाहित महिलाओं द्वारा मनाया जाने वाला पारंपरिक हिंदू त्योहार करवा चौथ, हाल के वर्षों में एक महत्वपूर्ण परिवर्तन से गुजरा है। जो कभी भक्ति और प्रेम का एक मार्मिक प्रदर्शन था, वह अब उपभोक्तावाद और सोशल मीडिया द्वारा संचालित एक ग्लैमरस तमाशा बन गया है। त्योहार का मूल आध्यात्मिक महत्व धीरे-धीरे खत्म हो रहा है, इसकी जगह दिखावे और प्रतिस्पर्धा की संस्कृति ने ले ली है। लेकिन हाल के वर्षों में, करवा चौथ की चकाचौंध से व्यवसाइयों के लिए एक आकर्षक बाजार बन गया है, जिसने इस त्यौहार के उत्सवी पहलू को भी अपने कब्जे में ले लिया है, जिससे इसका आध्यात्मिक सार सिर्फ एक दिखावा बनकर रह गया है। करवा चौथ का व्रत रह रही डॉ. नम्रता मिश्रा का कहना है कि करवाचौथ आस्था और अटूट श्रद्धा का पर्व है इससे पति और पत्नी का रिश्ता सुदृण होता है, इस दिन महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र की कामना करती है, स्त्रियां सोलह सिंगार करती है और चन्द्रमा की पूजा करती है। करवा चौथ का महत्व पहले भी था और आज भी है। उनये यह पूछने पर की यह करवा चौथ कब से शुरु हुआ टीवी शो के पहले या टीवी शो के बाद तो उनका जवाब था टीवी शो के बाद । अगर हिंदू धर्म की बात करें तो पूर्व से ही या यूं कहे कि प्राचीन काल से ही हरतालिका तीज (तीजा) का त्योहार मनाया जाता है जिसमे महिलाएं अपने पति की दीर्घायु और मंगल के लिये निर्जला व्रत रखती है । हरतालिका व्रत देवी पार्वती और भगवान शिव के पुनर्मिलन का प्रतीक है। पौराणिक कथाओं के अनुसार, पार्वती अपने पिछले जन्म में सती के रूप में पैदा हुई थीं और उनकी मृत्यु के बाद, शिव का प्यार जीतने के लिए उन्होंने पार्वती के रूप में पुनर्जन्म लिया था। यह व्रत भक्ति और वैवाहिक बंधन की मजबूती का प्रतीक है। करवा चौथ की उत्पत्ति विभिन्न किंवदंतियों से जुड़ी हुई है, लेकिन सबसे लोकप्रिय कहानियों में से एक वीरवती की कहानी है। पौराणिक कथा के अनुसार, वीरवती नाम की एक खूबसूरत राजकुमारी ने अपना पहला करवा चौथ का व्रत अपने पति के लिए रखा था, जो उससे बहुत दूर रहता था। जैसे-जैसे दिन चढ़ता गया, वह कमजोर होती गई और भूख और प्यास सहन करने में असमर्थ हो गई, उसने अपने भाइयों से उसका उपवास तोड़ने में मदद करने के लिए कहा। उन्होंने दर्पण का उपयोग करके उसे उसके पति की नकली छवि दिखाकर धोखा दिया और दावा किया कि वह खतरे में है। परेशान होकर उसने अपना व्रत तोड़ दिया. बाद में उसे पता चला कि उसके पति की वास्तव में मृत्यु हो गई है। वीरावती का दिल टूट गया और उसने बहुत प्रार्थना की और देवी के आशीर्वाद से वह उसे पुनर्जीवित करने में सफल रही। अपनी गलती का एहसास होने पर उसने हर साल समर्पण भाव से व्रत रखने का संकल्प लिया। इस कथा को पढ़कर सहज ही लगता है कि यह व्रत वास्तविक रूप एक पत्नी के प्यार और समर्पण की ताकत का प्रतीक है, जो करवा चौथ को कई महिलाओं के लिए प्रार्थना और उपवास का दिन बनाती है, जो अपने पतियों की भलाई और लंबी उम्र की कामना करती हैं। मगर वर्तमान मे टेलीविजन शो, फ़िल्में और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म ने करवा चौथ को एक ग्लैमरस इवेंट के रूप में दिखा कर इसको अलग ही आयाम दिया हैं, जिसमें विस्तृत सजावट, डिजाइनर कपड़े और महंगे गहने होते हैं। इस सतही चित्रण ने अवास्तविक अपेक्षा पैदा की हैं, जिससे महिलाओं पर सामाजिक मानदंडों के अनुरूप होने का दबाव बना है। करवा चौथ की इस चकाचौंध ने एक परेशान करने वाली प्रवृत्ति को जन्म दिया है, जहाँ महिलाएँ आध्यात्मिक आह्वान के बजाय सामाजिक दायित्व के रूप में इस त्यौहार में भाग लेने के लिए बाध्य महसूस करती हैं। बाहरी दिखावे और भौतिक संपत्तियों पर ज़ोर ने त्यौहार के मूल मूल्यों से ध्यान हटा दिया है। अब महिलाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे बिल्कुल सही दिखें, डिजाइनर कपड़े पहनें और भव्य पार्टियाँ आयोजित करें, बजाय इसके कि वे आत्मनिरीक्षण और आत्म-चिंतन पर ध्यान केंद्रित करें, जो कि इस त्यौहार का मूल उद्देश्य था। जैसे-जैसे करवा चौथ का व्यवसायीकरण होता जा रहा है, इसका आध्यात्मिक महत्व भी खत्म होता जा रहा है। इस त्यौहार का मूल उद्देश्य - पति-पत्नी के बीच गहरा संबंध बनाना और आध्यात्मिक विकास करना - इस चकाचौंध के बीच कहीं खत्म होता जा रहा है।

इस अनुष्ठान का अर्थ मात्र औपचारिकता बनकर रह गया है, जिसमें किसी भी तरह की वास्तविक भावनात्मक या आध्यात्मिक प्रतिध्वनि नहीं है। करवा चौथ के आध्यात्मिक सार को पुनः प्राप्त करना और इसके मूल महत्व को फिर से खोजना आवश्यक है। महिलाओं को त्यौहार के सतही दिखावे से परे देखने और इसके मूल मूल्यों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। ऐसा करके, हम त्यौहार के आध्यात्मिक महत्व को पुनर्जीवित कर सकते हैं और इसे अधिक सार्थक, प्रामाणिक उत्सव बना सकते हैं। करवा चौथ का व्यवसायीकरण एक व्यापक सांस्कृतिक बदलाव का लक्षण है, जहाँ उपभोक्तावाद की वेदी पर आध्यात्मिक मूल्यों की बलि दी जाती है। जब हम इस त्यौहार को मनाते हैं, तो हमें इसके मूल उद्देश्य को नहीं भूलना चाहिए। आइए हम इसके आध्यात्मिक महत्व को पुनर्जीवित करने का प्रयास करें और इसके द्वारा दर्शाए गए निस्वार्थ प्रेम और भक्ति का सम्मान करें।

वेब सीरीज समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अन्तर्भव में प्रबंध निदेशक है)

अनुपम खेर के विलक्षण अभिनय से सजी -'द सिग्नेचर'

जब आपका कोई अपना आसन्न मृत्यु के नज़दीक हो ,डॉक्टर उसे जीवित रखने में सर्वथा विफल हो और उपचार की तमाम सम्भावनाएं समाप्त हो चुकी हों तब मेडीकल प्रोटोकॉल में परिजन को उस मरीज़ के लिये एक प्रपत्र पर हस्ताक्षर करके देना होता है जिसे डी एन आर कहते हैं - डू नॉट रेसुसटेट इस प्रपत्र पर हस्ताक्षर करने का मायना होता है कि आप डॉक्टर को मरीज़ को जीवित रखने से निषेध की अनुमति दे रहे हैं। इस एक दस्तावेज पर परिजन जब हस्ताक्षर करते हैं तो वो बड़ा मार्मिक दृष्य होता है । के सी बोकाड़िया इसी संवेदनशील कथानक के साथ- ' द सिग्नेचर ' फिल्म के माध्यम से ओटीटी के क्षेत्र में कदम रख रहे हैं। हिन्दी सिनेमा में सबसे तेज पचास फिल्में बनाने वाले निर्माता के सी बोकाडिया की दूसरी पारी इस फिल्म के साथ ओटीटी पर शुरू हो रही है और अपनी दूसरी पारी की पहली गेंद को ही उन्होंने मैदान के बाहर पहुँचाकर अपनी मेधा और क्षमता को प्रदर्शित किया है । द सिग्नेचर , एक अवार्ड विनिंग फिल्म है जो अनुपम खेर के बेजोड़ अभिनय से सजी है ।

समूचा जीवन बच्चों की परवरिश में गुजार देने वाले दम्पती अक्सर रिटायरमेंट के बाद अपने बच्चों के पास विदेश घूमने की योजना बनाते हैं। रोशनी उनको हर तरफ दिखती है लेकिन, बटन बन्द होते ही ये रोशनी चली जानी है। जीवन ऐसा ही है। पता ही नहीं चलता कि किस रात हम बटन बन्द करके सोएंगे और शायद सुबह उठे ही नहीं। मृत्यु ऐसी ही होनी चाहिए। न खुद को कष्ट, न घरवालों को कष्ट। ईश्वर किसी को उस हालत में न लाये जब अस्पताल में उसे 'डीएनआर' पर सिगनेचर करना हो। मतलब, अपने किसी करीबी के बारे में ये लिखकर देना हो कि जब उसके दिल की धड़कन बंद हो तो उसे कृत्रिम तरीके से दोबारा चलाने की कोशिश न की जाए। और अधिकतर अस्पताल इन दिनों कैसे होते हैं, ये तो पता ही है। साफ जवाब मिलता नहीं है, मरीज की साँस मशीन से चलती रहती है। घरवाले पैसा जुटाते जुटाते

सड़क पर आ जाते हैं।

अनुपम खेर एक विलक्षण अभिनेता हैं और बीते कल में यदि -' साराँश ' और' डैडी ' से उनकी श्रेष्ठता साबित हुई थी तो इस पीढ़ी को 'द सिग्नेचर' से उनके अभिनय की थाह जाँचने का अवसर मिलेगा । अनुपम खेर ने इस फिल्म में अनुपम खेर ने वृद्ध पिता की भूमिका निभाई है । बेटी का विवाह कर चुका पिता जब यह कहता है कि बेटों से हमेशा चमत्कार की कोशिश नहीं करनी चाहिए तो वह पूरी एक पीढ़ी का दर्द समेटकर परदे पर रख देता है। यह फिल्म पहले फ्रेम से आखिरी फ्रेम तक अनुपम खेर की है। नेशनल अवार्ड विनिंग फिल्म है 'द सिगनेचर'। खुद से, परिवार से, समाज से हताश एक इंसान को जब उसके पहले प्यार में रोशनी नजर आती है और यह रोशनी नजर आते ही उसकी आँखों पर पड़ा परदा जो हटता है तो फिर क्या ही हाथ आ पाता है.. ! रुलाई फूट ही पड़ती है, इस आखिरी दृश्य में। टूटी जिल्द से किताबें बनाने की यह कोशिश बहुत मार्मिक है !

मराठी रंगमंच और सिनेमा का बड़ा नाम रहे लेखक,निर्देशक गजेंद्र अहिरे ने फिल्म ' सिगनेचर ' में आखिरकार वह आसमान नाप ही लिया, जिसके वह हकदार रहे हैं । गजेंद्र की हिन्दी में ये चौथी फिल्म है। मानवीय संवेदनाओं के वह चितेरे हैं। कैमरे की कूची से रुपहले परदे के कैनवास पर उन्होंने फिल्म 'द सिगनेचर' में जिंदगी लिखी है।

गजेन्द्र अभी तक दो बार नेशनल अवार्ड जीत चुके हैं ।फिल्म में अभिनय का जहाँ तक सवाल है महिमा चौधरी ने अपने अभिनय से मिटा दिया रील और रीयल का फर्क । बिना विग पहने कैमरे के सामने चली आने वाली अभिनेत्री महिमा चौधरी ने तो दिल जीत लेने वाला काम किया है। उनके अस्पताल पहुँचने से ही कहानी का असली ट्विस्ट आता है। अरविंद पाठक को अस्पताल में आईसीयू में भर्ती अपनी पत्नी के लिए डीएनआर लिखने की हिम्मत अपनी इस पूर्व साथी से ही मिलती है। अनुपम खेर की बेटी बनीं संगीता बोकाडिया जैन का अभिनय भी प्रभावशाली है और भविष्य में उनसे कुछ और कमाल करने की उम्मीदें जगाता है। अन्नू कपूर भी फिल्म में दम भरते नजर आते हैं। हालांकि, उनका किरदार हमेशा की तरह यहां भी ओवरएक्टिंग का शिकार हो गया है। फिल्म 'द सिगनेचर' को मजबूती से थामे रहने में इसके सहायक कलाकारों ने भी कमाल काम किया है। कारोबारी चिकित्सक के रूप में मनोज जोशी का व्यक्तित्व कहानी की बुनावट करता है । रणवीर शौरी ने अपने अभिनय के माध्यम से कमाल का काम अपने छोटे से स्पेशल अपीयरेंस में किया है। केविन गाँधी का ताव देखते ही बनता है।

बोरदेही में निशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित, 58 रक्तदाताओं ने किया रक्तदान

बैतूल। ग्राम बोरदेही में आरोग्य अनुसंधान वेलफेयर फउण्डेशन बैतूल एवं डॉक्टर जगन्नाथ यदुवंशी द्वारा निःशुल्क स्वास्थ्य परामर्श एवं रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में रक्तदान के लिए ग्रामीण बड़ी संख्या में लोग आगे आए। बोरदेही जैसे ग्रामीण क्षेत्र में भी 58 ग्रामीणों ने अपने रक्त का दान किया। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर क्षेत्रीय विधायक डॉ योगेश पण्डाग्रे, जनपद अध्यक्ष गणेश यादव, भाजपा मण्डल अध्यक्ष ग्रामीण यशवंत यादव, महेश मर्सकोले, बी.एम.ओ. डॉ अशोक नरवरे, सरपंच सरिता साहू, डॉ अंकुर राठौर, टीआर सरसोदे सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि और ग्रामीण उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन जगन्नाथ यदुवंशी ने किया। श्री यदुवंशी ने बताया कि जन-औषधी दूसरी दवाईयों की तुलना में काफी सस्ती मिलती है। इसके प्रचार-प्रसार के लिए समय-समय पर शिविर लगाकर ग्रामीणों को इसकी उपयोगिता के प्रति जागरूक किया जा रहा है।

छात्राओं को लिफ्ट देकर छेड़छाड़ करने वाला आरोपी गिरफ्तार

बैतूल। बैतूल बाजार पुलिस ने नाबालिग बालिकाओं के साथ छेड़छाड़ करने वाले आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। 18 अक्टूबर को थाना बैतूल बाजार में अज्ञात मोटर साइकिल वाहन चालक द्वारा नाबालिग बालिकाओं को लिफ्ट देने के बहाने उनसे साथ छेड़छाड़ करने की शिकायत प्राप्त हुई। मामले की गंभीरता को

देखते हुए बैतूल बाज़ार पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ अपराध पंजीबद्ध कर जांच शुरू की। जांच के दौरान पुलिस ने घटना स्थल के आस-पास लगे सीसीटीवी कैमरों की मदद से आरोपी की पहचान की। मुखबिरों से मिली जानकारी के आधार पर 24 घंटे के भीतर आरोपी अंकित पवार पिता उदल पवार उम्र 30 साल निवासी डहरगांव थाना कोतवाली को गिरफ्तार कर घटना के दौरान उपयोग की गई मोटर साइकिल भी जब्त की गई। इस कार्रवाही में थाना प्रभारी निरीक्षक अंजना धुर्वे, उपनिरीक्षक चित्रा कुमरे, उपनिरीक्षक मस्तकार, उपनिरीक्षक विनोद मालवीय, सायबर सेल टीम, प्रआर अशोक झरबडे, प्रआर अरूण, प्रआर निर्मल, प्रआर दीवानसिंह, प्रआर अजय, आर अरुण, आर कमल चौरे, आर कमल पवांर, आर दीपेन्द्र, आर बलराम, और महिला आरक्षक स्नेहल ने अहम भूमिका निभाई।

पुलिस अधीक्षक की नागरिकों से अपील- पुलिस अधीक्षक निश्चल एन झारिया ने नागरिकों से अपील की है कि वे अपने परिवार और बच्चों की सुरक्षा के प्रति सतर्क रहें। यदि किसी भी प्रकार की संदिग्ध गतिविधि या घटना सामने आती है, तो तुरंत पुलिस को सूचित करें। पुलिस का प्रमुख उद्देश्य महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है, और इसमें समाज का सहयोग अत्यंत आवश्यक है। नाबालिगों से संबंधित अपराधों में त्वरित कार्रवाई के लिए पुलिस सदैव तत्पर है, लेकिन इसके लिए समय पर जानकारी मिलना महत्वपूर्ण है। पुलिस अधीक्षक ने अभिभावकों से अपील की कि वे अपने बच्चों को अच्छे और बुरे स्पर्श के बारे में जागरूक करें और उन्हें समझाएं कि किसी भी प्रकार की अनुचित घटना पर वे बेझिझक अपने माता-पिता या पुलिस से संपर्क करें। श्री झारिया ने समाज के सभी वर्गों से आग्रह किया कि वे कानून व्यवस्था बनाए रखने और महिलाओं एवं बच्चों की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए पुलिस के साथ सहयोग करें।

पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा , विधायक नीना वर्मा , विधायक कालू सिंह ठाकुर को भाजपा जिलाध्यक्ष ने दिलाई सक्रिय सदस्यता

धार। शनिवार को भाजपा जिलाध्यक्ष मनोज सोमानी के नेतृत्व में भाजपा जिला सदस्यता टोली ने भाजपा भाजपा वरिष्ठ नेता एवं पूर्व केंद्रीय मंत्री विक्रम वर्मा, धार विधानसभा क्षेत्र विधायक नीना वर्मा, धरमपुरी

विधायक कालू सिंह ठाकुर को भाजपा सक्रिय सदस्यता की प्रक्रिया पूर्ण कर आवेदन प्राप्त कर सक्रिय सदस्यता ग्रहण कराकर अभियान का शुभारंभ किया। श्री सोमानी ने बताया कि रविवार को जिले के सभी मंडलों में पार्टी कार्यकर्ता अधिक से अधिक संख्या में सक्रिय सदस्य बनकर इतिहास बनाएंगे। पार्टी के संविधान के अनुसार प्राथमिक सदस्य बनाने वाले कार्यकर्ता सक्रिय सदस्य बन सकते हैं। प्रदेश संगठन ने सक्रिय सदस्य बनने के लिए 50 सदस्य बनना अनिवार्य किया गया है। सक्रिय सदस्यता अभियान 31 अक्टूबर तक चलाया जायेगा। इस अवसर पर जिला महामंत्री प्रकाश धाकड़ भाजपा नगर मंडल अध्यक्ष विपिन राठौर और नितेश अग्रवाल जिला कार्यालय मंत्री जगदीश जाट,भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा उपस्थित रहे। जानकारी भाजपा जिला मीडिया प्रभारी संजय शर्मा ने दी।

उद्धवदास मेहता स्मृति न्यास ने डा कर्मा को आयुर्वेद सेवा सम्मान दिया

धार। पंडित भाई उद्धवदास मेहता स्मृति न्यास द्वारा भोपाल में आयोजित समारोह में आयुर्वेद चिकित्सा के प्रति समर्पित ख्यात और सेवाभावी चिकित्सकों का सम्मान किया गया। इस वर्ष धार नगर के प्रसिद्ध आयुर्वेद एवं पंचकर्म चिकित्सक डाक्टर दिनेश कर्मा को आयुर्वेद

सेवा के प्रति समर्पण और निष्ठा के लिए ÷पंडित उद्धवदास मेहता स्मृति आयुर्वेद सेवा सम्मान 2024÷ से सम्मानित किया गया है। भोपाल में शुक्रवार को राज्यपाल मंगू भाई पटेल द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया। उन्होंने बताया कि स्व. पंडित उद्धव दास मेहता भोपाल के सुप्रसिद्ध आयुर्वेद चिकित्सक थे। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संस्कृति, परंपराओं और संस्कारों के लिए समर्पित किया। वे स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे और स्वतंत्रता के पश्चात भोपाल के विलीनीकरण आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई थी। इसलिए यह सम्मान समारोह न केवल डाक्टर कर्मा के लिए बल्कि पूरे आयुर्वेद समुदाय के लिए एक गर्व का पल है। जो आयुर्वेद के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।जानकारी धार विचार मंच के कमलेश कुमार ने दी।

10 महीने पहले जिला अस्पताल से रिटायर हुए थे रेडियोलॉजिस्ट, अभी तक नये डॉक्टर की पदस्थापना नहीं

मरीजों को निजी अल्ट्रासाउंड सेंटरों से कराना पड़ रहा सोनोग्राफी, जेब हो रही हल्की

संजय द्विवेदी, बैतूल।

जिला अस्पताल बिना रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर के संचालित हो रहा है, यहां जो रेडियोलॉजिस्ट पदस्थ थे, वे पिछले साल दिसंबर 2023 में रिटायर हो चुके है, तब से लेकर वर्तमान तक नये रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हो पाई है। जिस समय डॉक्टर के रिटायरमेंट की तिथि नजदीक थी, उसी समय अस्पताल प्रबंधन ने स्वास्थ्य विभाग को आगह कर दिया था कि नये डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हुई तो मरीजों की सोनोग्राफी करने में दिक्कते होगी, मुश्किलें और बढेगी, लेकिन विभाग ने भी इस दिशा में ज्यादा ध्यान नहीं दिया। अब जिला अस्पताल में पेट से संबंधित मरीजों की सोनोग्राफी नहीं होने से उन्हें परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। दरअसल जिला अस्पताल में पदस्थ रेडियोलॉजिस्ट डॉ. ओपी यादव पिछले साल 31 दिसम्बर 2023 को रिटायर हो गए। रिटायरमेंट के 10 महीने बाद भी जिला अस्पताल में नए डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हो सकी, जिससे अस्पताल में सोनोग्राफी का कार्य प्रभावित हो गया है। केवल महिला डॉक्टर द्वारा इमरजेंसी में गर्भवती महिलाओं की सोनोग्राफी की जा रही है, इसके अलावा अतिरिक्त मरीजों की सोनोग्राफी जांच नहीं होने से परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है। गौरतलब है कि जिला अस्पताल में प्रतिदिन 500 से एक हजार से अधिक मरीज इलाज कराने आते है। ऐसे में डॉक्टर जिन्हें पेट संबंधी परेशानी है, उन्हें सोनोग्राफी कराने की सलाह देते है, लेकिन जिला अस्पताल में डॉक्टर नहीं होने से मरीजों को शहर के प्राइवेट अल्ट्रासाउंड सेंटर जाना पड़ता है।

शासन को कई बार कराया अवगत, नहीं हुई पदस्थापना- जिला अस्पताल प्रबंधन ने स्वास्थ्य विभाग भोपाल को पत्र के माध्यम से कई बार रेडियोलॉजिस्ट नहीं होने की जानकारी दी। विभाग की तरफ से भी अभी तक कोई जवाब नहीं आया है कि कब तक डॉक्टर की पदस्थापना होगी। अस्पताल के अधिकारियों के मुताबिक रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर रिटायर होने वाले थे, उसके एक पखवाड़े पहले से ही पत्र जारी किया और डॉक्टर की मांग की थी। इसके बाद भी अनेको बार पत्राचार किया. किन्तु रेडियोलॉजिस्ट डॉक्टर की पदस्थापना नहीं हुई है। जिससे लोगों के साथ-साथ डॉक्टरों की भी परेशानी बढ़ गई है कि वे मरीज के सही उपचार के लिए सोनोग्राफी नहीं करवा रहे है। बिना सोनोग्राफी के जांच करना या निजी सेंटरों से सोनोग्राफी करवाने की सलाह देना डॉक्टरों के लिए भी परेशानी का कारण बन गया है।

गरीब मरीजों पर पड़ती है आर्थिक मार- जिला अस्पताल में निःशुल्क सोनोग्राफी की जाती है, लेकिन यहां डॉक्टर नहीं होने से मरीजों को निजी सेंटरों पर सोनोग्राफी करवानी पड़ रही है। जिसमें सबसे अधिक आर्थिक मार गरीब वर्ग के मरीजों पर पड़ती है। जहां पर अल्ट्रासाउंड जांच के लिए उनको 800 से 900 रुपए चुकाना होते हैं। यही सोनोग्राफी जिला अस्पताल में निःशुल्क हो जाती थी। कई लोगों के पास रूपए नहीं होने पर सोनोग्राफी तक नहीं करवा पा रहे है। लेकिन अभी अस्पताल में नये रेडियोलॉजिस्ट को लेकर कोई ठिकाना नहीं है। कब तक नए डॉक्टर अस्पताल को मिलेगा, यह बताना भी अभी संभव नहीं है।

अगले महीने फिर दो डॉक्टर हो रहे रिटायर

जिला अस्पताल से अगले महीने सिविल सर्जन डॉ. अशोक बारंगा और इंटीग्रेटेड पैथालॉजी लैब के इंचार्ज डॉ. डब्ल्यूए नागले रिटायर हो रहे हैं। जिसके बाद दो बड़े पद यानी सिविल सर्जन और इंटीग्रेटेड पैथालॉजी लैब इंचार्ज के पद रिटायरमेंट के बाद 30 नवंबर को खाली हो जाएंगे। ऐसे में अस्पताल की व्यवस्था और गडबड़ा सकती है। सीएमएचओ डॉ रविकांत उडके ने बताया कि जो पद खाली हो रहे हैं उनके वैकल्पिक इंतजाम करने प्रयास किए जा रहे हैं। शासन को भी इस संबंध में लिखा है। वर्तमान में जिला अस्पताल की इंटीग्रेटेड पैथालॉजी लैब में 12 कर्मचारियों का स्टाफ है। पैथालॉजी लैब के संचालन के लिए पैथालॉजी में स्नातकोत्तर की डिग्री होना जरूरी है। इंटीग्रेटेड पैथालॉजी लैब के इंचार्ज डॉ. डब्ल्यूए नागले ने बताया कि शासन की ओर से ही व्यवस्थाएं की जाएंगी हम क्या कर सकते हैं। वैसे लैब के संचालन के लिए फिलहाल कोई भी स्नातकोत्तर पैथालॉजी की डिग्री वाला कर्मचारी नहीं है।

इनका कहना

उच्च अधिकारियों के निर्देशानुसार रेडियोलॉजिस्ट का पद खाली होने के कारण, शिशु रोग विशेषज्ञों द्वारा ही गर्भवती महिलाओं की सोनाग्राफी की जा रही है। रेडियोलॉजिस्ट नहीं होने की जानकारी शासन को पत्र भेजकर कई बार अवगत कराई जा चुकी है, लेकिन अभी तक रेडियालॉजिस्ट की नियुक्ति नहीं हुई, जिसके कारण अन्य बीमारियों के मरीजों की सोनाग्राफी जिला अस्पताल में नहीं हो पा रही है।

- डॉ. अशोक बारंगा,
सिविल सर्जन, जिला अस्पताल, बैतूल

नगर में महिलाओं ने करवाचौथ की तैयारियां की पूरी

पति की लंबी आयु के लिए रखेंगी व्रत

भौरा। नगर की महिलाओं द्वारा आज 20 अक्टूबर को करवा चौथ का व्रत रखा जाएगा, जो पति की लंबी आयु और सुख-समृद्धि के लिए किया जाता है। इस अवसर पर महिलाओं ने तैयारियों को जोर-शोर से पूरा कर लिया है। साज-सज्जा और परंपरागत पूजा की सामग्री की खरीदारी बीते दिनों से ही जारी रही, वहीं करवा चौथ की सजीवता बाजारों में भी देखी गई। मेहंदी लगाने से लेकर पारंपरिक परिधानों तक, महिलाओं ने हर एक पहलू पर खास ध्यान दिया है। इस व्रत को लेकर महिलाओं में खास उत्साह देखा जा रहा है। व्रत की शुरुआत सूर्योदय से पहले सर्गी खाने से होगी, जिसके बाद वे पूरे दिन निर्जला उपवास रखेंगी। शाम को चांद के दर्शन के बाद पति के हाथ से जल ग्रहण कर व्रत तोड़ा जाएगा। इस दिन को खास बनाने के लिए अनेक महिलाएं सामूहिक रूप से भी पूजा करेंगी, जहां कथा सुनाई जाएगी और करवा चौथ के पारंपरिक रीति-रिवाजों का पालन किया जाएगा। भौरा नगर में रोशनी,ज्योति, प्रिया, दीपिका, पूजा जैसी कई महिलाओं ने बताया कि यह व्रत उनके लिए अत्यधिक श्रद्धा और प्रेम का प्रतीक है। वे इसे हर साल मनाती हैं और इसका पालन पूरी आस्था और समर्पण के साथ करती हैं। इस दिन की खास पूजा में करवा चौथ की कथा सुनना, मिट्टी के करवे में जल भरना और पति की लंबी उम्र की कामना करना शामिल है। स्थानीय बाजार में पूजा की सामग्री जैसे करवा, सिन्दूर, चूडिय़ां, कपड़े और मिठाइयों की खासी मांग रही। दुकानदारों ने बताया कि महिलाओं ने इस बार भी खास जोश के साथ करवा चौथ की खरीदारी की, जिसमें पारंपरिक परिधान और सजावटी सामान सबसे अधिक पसंद किए गए। इस अवसर पर बाजारों में मेहंदी कलाकारों की भी अच्छी खासी व्यस्तता देखी गई। करवा चौथ का व्रत न सिर्फ एक धार्मिक अनुष्ठान है, बल्कि यह दांपत्य जीवन में प्रेम और एकता का भी प्रतीक है।

वाटरप्रूफ डोम में आज बालाजीपुरम में मनाया जाएगा सामूहिक करवा चौथ

गुजरात से आए पंडितों व्दारा कराई जाएगी विशेष पूजा

मंदिर प्रबंधन ने भोजन और पूजन का किया इंतजाम

बैतूल। हर साल की तरह इस साल भी आज रविवार 20 अक्टूबर को बालाजीपुरम में करवा चौथ का पर्व धूमधाम से मनाया जाएगा। इसमें इस बार 500 से अधिक जोड़े शामिल होने की उम्मीद है। रविवार 20 अक्टूबर को होने वाले इस आयोजन के लिए सभी तैयारियां पूर्ण हो चुकी हैं। भारत के पांचवें धाम श्री रुक्मिणी बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में करवा चौथ पर सामूहिक पूजन के साथ सामूहिक भोज का आयोजन भी रविवार को किया गया है। पूर्णतः निशुल्क इस आयोजन में सभी दंपत्तियों को आमंत्रित किया गया है। भारत के पांचवें धाम श्री रुक्मिणी बालाजी मंदिर बालाजीपुरम बैतूल में सामूहिक करवा चौथ का आयोजन बीते काफी वर्षों से निरंतर हो रहा है। इस आयोजन के संबंध में बालाजीपुरम के प्रमुख पुजारी असीम पंडा स्वामी के अनुसार शाम 6 बजे से भगवान बालाजी की संध्या आरती

शुरू होगी। इसके बाद शाम 7 बजे से बालाजीपुरम मंदिर प्रांगण में बने भक्त निवास के सामने वाटरप्रुफ टेंट में सामूहिक पूजन का कार्यक्रम होगा। समय पर उपस्थित होने वाली सभी महिलाओं को पूजन सामग्री पूर्णतः निशुल्क दी जाएगी। इस पूजन में पति-पत्नी दोनों का आना अनिवार्य है।

बालाजीपुरम मन्दिर के मुख्य पुजारी असीम पंडा स्वामी ने बताया कि सामूहिक पूजन के लिए गुजरात से पंडितों का दल बैतूल आ चुका है। इसके साथ ही पूजन और सामूहिक भोज की तैयारियां भी पूर्ण हो चुकी हैं। रविवार को चन्द्रोदय भी इस वर्ष 8 बजे तक हो जाएगा। चन्द्रमा को अर्घ्य चढ़ाने के बाद परंपरा अनुसार पति अपनी पत्नी के लिए थाली सजाकर लाएंगे और व्रत के बाद पहला कौर खिलाएंगे। सभी दंपतियों के सामूहिक भोज के साथ ही शेष श्रद्धालुओं को भी भोजन प्रसादी दी जाएगी। बालाजीपुरम संस्थापक सेम वर्मा ने सभी दंपतियों से इस आयोजन में शामिल होने की अपील की है।

भौरा बाजार में सांडों की घमासान लड़ाई, दहशत में लोग, वाहनों से भरी सडक़ पर ,रुका यातायात

बैतूल/भौरा। साप्ताहिक बाजार के दौरान अचानक अफरा-तफरी मच गई, जब दो आवारा सांडों ने मुख्य बाजार की सडक़ पर भिड़ंत शुरू कर दी। शाम के समय बाजार में खरीदारी के लिए आई भीड़ देखते ही देखते अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भागने लगी। सांडों की लड़ाई इतनी खतरनाक थी कि कई दोपहिया वाहन, जो सडक़ किनारे खड़े थे, सांडों की चपेट में आकर गिर पड़े। सांडों के बीच जारी इस लड़ाई ने 10 मिनट तक मुख्य सडक़ पर आवागमन पूरी तरह से रोक दिया। लोग अपने वाहन छोडक़र भाग गए, जिससे बाजार की सडक़ों पर जाम लग गया। स्थानीय दुकानदारों ने बताया कि यह पहला मौका नहीं है जब आवारा सांडों ने इस तरह से बाजार की शांति भंग की हो। हमेशा कुछ न कुछ घटना होती रहती है, लेकिन इस बार सांडों की लड़ाई ने लोगों को काफी देर तक परेशान रखा। इस घटना में एक महिला, जो साप्ताहिक बाजार में सब्जी खरीदने आई थी, भी गिर गई। सांडों की लड़ाई से बचने के लिए भागते समय वह सडक़ पर गिर गई। गनीमत रही थी महिला को चोटे नहीं आई।

आवारा पशुओं की समस्या बनी सिरदर्द

भौरा नगर में आवारा पशुओं की समस्या गंभीर होती जा रही है। बाजार और मुख्य सडक़ पर बैठे पशु अक्सर राहगीरों और वाहन चालकों के लिए खतरा बन रहे हैं। स्थानीय निवासियों का कहना है कि आवारा पशुओं को लेकर पंचायत कोई ठोस कदम नहीं उठा रही जिससे आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं।

पंचायत पर उठे सवाल

नागरिकों का आरोप है कि ग्राम पंचायत आवारा पशुओं को पकडऩे की कोई कार्रवाई नहीं कर रही है, जिससे सडक़ों पर इस तरह की घटनाएं आम हो गई हैं। दुकानदारों और राहगीरों ने नगर प्रशासन से तुरंत आवारा पशुओं के लिए स्थायी समाधान की मांग की है। एक दुकानदार ने कहा, हमारा व्यवसाय प्रभावित हो रहा है, और प्रशासन की निष्क्रियता से हमें निराशा हो रही है। अगर जल्द ही समाधान नहीं निकाला गया तो, बाजार में ऐसे हादसे होते रहेंगे।

इनका कहना-

हमने ग्राम में अलाउंस कर दिया है कि सभी पशु मालिक अपने जानवरों को बांध कर रखें। अन्यथा पशुओं को कांजी हाउस में बंद किया जाएगा। जिसका जुर्माना पशु मालिकों से वसूला जाएगा।

- मीरा धुर्वे,
सरपंच, ग्राम पंचायत भौरा

प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस में युवा उत्सव का आयोजन हुआ

धार। प्राचार्य प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ़ एक्सीलेंस डॉ एस.एस. बघेल, प्रशासनिक अधिकारी डॉ गजेंद्र उज्जैनकर एवं डॉ. आर एस मंडलोई के मार्गदर्शन में दो दिवसीय युवा उत्सव कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जिसमें प्रथम दिवस में शुभारंभ सत्र में डॉ

अरुणा मोटवानी ने कहा कि युवा उत्सव वाकई में युवाओं का उत्सव है। इसे धूमधाम से मनाना चाहिए। इससे व्यक्तित्व में निखार आता है और बहुत कुछ सीखने को मिलता है। वही डॉ राजश्री विभूते ने संबोधित करते हुए कहा कि छात्र-छात्राओं को मंच मिलना और मंच पर अपनी प्रस्तुति देना अपने आप में अनूठा है और यदि इस मौके को आप भूना लेते हैं तो आप अपने व्यक्तित्व में निखार ला सकते हैं। डॉ कविता पाल ने कहा की भारत देश एक ऐसा देश है जहां पर विभिन्न प्रकार की कलाओं को सभी व्यक्ति जीते हैं। अन्य ऐसा कोई देश नहीं जहां पर गरबा होता हो। विभिन्न प्रकार के प्रतिदिन त्योहार मनाए जाते हो, प्रतिदिन कुछ ना कुछ विधाएं होती हो, यह अनूठा देश हमारा भारत ही है। कार्यक्रम की रूपरेखा युवा उत्सव प्रभारी डॉक्टर भावना परमार ने विस्तार पूर्वक बताई । कार्यक्रम का संचालन डॉ निर्भय सिंह सोलंकी ने किया तथा आभार डॉ एल एस निंगवाल ने माना। सरस्वती वंदना श्रुति बी ए तृतीय वर्ष ने प्रस्तुत की तथा स्वागत गीत जयदीप निगवाल ने गाया। इस अवसर पर डॉ लक्ष्मी बघेल, डॉ आरती बोरासी, डॉ प्रदीप शर्मा, डॉ भगवान सिंह पटेल, डॉ बीएस सिसोदिया, डॉ एच एस मंडलोई, डॉ एम एल कुमावत, डॉ चारु काशिव आदि उपस्थित थे। युवा उत्सव के साथ-साथ मतदाता जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया। यह जानकारी युवा उत्सव प्रभारी डॉ भावना परमार ने दी।

दुर्गा पूजा पंडाल में काजोल बन गई सिंघम

जया बच्चन, रानी मुखर्जी, काजोल सहित तमाम बॉलीवुड स्टार दुर्गा पूजा में शामिल हुए। काजोल भी अपनी फैमिली के साथ दुर्गा पूजा पंडाल पहुंची। उन्होंने अजय देवगन और बेटे युग के साथ फैमिली का एक वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ, जिसने लोगों का ध्यान खींचा। सोशल मीडिया यूजर्स ने काजोल और अजय देवगन के इस वीडियो में ऐसी चीज नोटिस की, जो चर्चा का विषय बनी और लोगों ने रिएक्शन दी।

काजोल अपनी फैमिली के साथ दुर्गा पूजा पंडाल पहुंची इसी दौरान काजोल ने अपने पति अजय देवगन और बेटे युग के साथ जमकर पोज दिए। इसका वीडियो भी सोशल मीडिया पर सामने आया। इसमें देखा जा सकता है कि काजोल फोटो क्लिक होने के दौरान पति अजय देवगन को सही से पोज देने के लिए चुटकी लेती नजर आई। इसके बाद लोग जमकर रिएक्शन दे रहे हैं। एक यूजर ने लिखा 'पति और पत्नी वाली कॉमन चीजें!' एक यूजर ने लिखा 'सिंघम भी बीवी से डरता है!' एक यूजर ने लिखा 'सबकी वाइफ ऐसी ही होती हैं।' एक यूजर ने लिखा 'लगता है लड़ाई हुई है।'

अजय देवगन की फिल्म 'सिंघम अगेन' दिवाली पर सिनेमाघरों में रिलीज होगी। रोहित शेट्टी के डायरेक्शन में बनने वाली इस फिल्म में अजय देवगन के अलावा करीना कपूर, दीपिका पादुकोण, अर्जुन कपूर, टाइगर श्रॉफ, रवि किशन और जैकी श्रॉफ भी नजर आने वाले हैं। फिल्म 'सिंघम अगेन' को लेकर काफी उत्सुकता है। इस फिल्म का ट्रेलर हाल ही में रिलीज किया गया। वहीं, काजोल की पाइप लाइन में 'सरजमीन, दो पत्ती सहित कई फिल्म हैं। काजोल की इन फिल्मों का उनके फैंस इंतजार कर रहे हैं।

बर्थडे पर जलसा के बाहर भारी भीड़ उमड़ी

अमिताभ बच्चन 82 साल के हो गए। उनका जन्म 11 अक्टूबर को 1942 में उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में हुआ था। बर्थडे के मौके पर अमिताभ बच्चन के घर 'जलसा' के बाहर का एक वीडियो इंटरनेट पर वायरल हुआ था। इस वीडियो में फैंस एक्टर के घर के बाहर उनका बर्थडे सेलिब्रेट करते दिखाई दिए। वीडियो में देखा जा सकता है कि फैंस केक काटकर बॉलीवुड के शहंशाह का बर्थडे मना रहे हैं। इस वीडियो को विरल भयानी के इंस्टाग्राम हैंडल पर शेयर किया गया। इस वीडियो में फैंस अमिताभ बच्चन के बर्थडे पर काफी खुश दिखे।

इस अभिनेता ने अपने करियर की शुरुआत वॉयस नैरेटर के तौर पर की थी। इसके बाद उन्होंने एक्टिंग में अपना हाथ आजमाया और फिल्म 'जंजीर' में अमिताभ बच्चन का 'एंग्री यंग मैन' लुक लोगों को काफी पसंद आया। एक्टर ने अपने करियर में सैकड़ों

फिल्में की और उम्र के इस पड़ाव में भी वह लगातार काम कर रहे हैं। अमिताभ बच्चन के इस जज्बे को देखकर आज की युवा पीढ़ी भी उनसे काफी प्रेरणा लेती है। यही कारण है कि केवल देश ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में अमिताभ बच्चन के करोड़ों फैंस हैं।

अमिताभ के बर्थडे के मौके पर हर साल की तरह इस साल भी 'जलसा' के बाहर फैंस की भीड़ उमड़ी, जिसका वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हुआ। अमिताभ बच्चन हाल ही में फिल्म 'कल्कि 2898 एडी' में नजर आए थे। नाग अश्विन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अमिताभ बच्चन ने 'अश्वत्थामा' का किरदार निभाया था। फिल्म में एक्टर प्रभास और दीपिका पादुकोण भी लीड रोल में थे। 600 करोड़ रुपये के बजट में बनी इस फिल्म ने बॉक्स ऑफिस पर शानदार कमाई की थी। फिल्म में अमिताभ बच्चन की एक्टिंग को काफी सराहा गया।

रियल बॉक्स

समय के साथ सब बदला, रेखा ही नहीं बदली

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

कुछ दिन पहले रेखा ने अपना 70वां जन्मदिन मनाया। उससे पहले रेखा की 'आईफा' के मंच पर डांस करते हुए तस्वीरें मीडिया में छाई थी। इस उम्र का ज्यादातर हिस्सा यानी करीब पचास साल रेखा ने फिल्मों में बिताए। यह अरसा कम नहीं होता। न जीवन में और अभिनय की दुनिया में! इस समय काल में तीन पीढ़ियां जन्म लेकर जवान हो जाती है। यदि फिल्मों की बात की जाए तो इस अरसे में कई हीरो और हीरोइन आकर, पहचान बनाकर गुम हो जाते हैं। याद किया जाए, तो बीते पचास साल में कलाकारों की एक लंबी कतार आगे निकल गई। लेकिन, कोई अपनी जगह खड़ा है, तो वो है अभिनेत्री रेखा, जिसने उम्र को अपनी मुट्ठी में जकड़ लिया। वे अब फिल्मों में काम नहीं करती, पर उनकी लोकप्रियता बरक़रार है। आज भी उतनी ही खूबसूरत दिखती हैं, जितनी 30 साल पहले लगती थी। जबकि, फ़िलहाल वे 69 साल की हैं। उम्र का ये वो पड़ाव है जिसमें व्यक्ति खुद स्वीकार लेता है कि वो बूढ़ा हो गया, पर रेखा नहीं हुई! आज भी जब टीवी पर किसी फंक्शन में दिखाई देती हैं, तो सारे कैमरे उनकी तरफ मुड़ जाते। भारी कांजीवरम साड़ी, हाई हील, चेहरे पर भरपूर मेकअप, मांग में सिंदूर और चेहरे पर वही मुस्कराहट। सब कुछ वैसा ही जो किसी हीरोइन में दर्शक देखना चाहते हैं। लेकिन, बढ़ती उम्र को थामना आसान नहीं हैं। फिर भी रेखा ने यह सब किया।

निःसंदेह रेखा बेहद खूबसूरत है। वे फिल्म इंडस्ट्री की उन हीरोइनों से भी कहीं ज्यादा सुंदर हैं, जिन्हें दुनिया विश्व सुंदरी और ब्रह्मांड सुंदरी के ख़िताब से नवाज चुकी है। उनकी पर्सनल और प्रोफेशनल लाइफ में ढेरों उतार-चढ़ाव आए, लेकिन इसका असर उनकी खूबसूरती पर नहीं पड़ा। किंतु, जिन्होंने रेखा को 1970 में आई उनकी पहली फिल्म 'सावन भादों' में देखा था, वे तब और बाद की रेखा में फर्क समझते हैं। सांवली और बेडौल सी उस रेखा में बाद में बहुत फर्क आता गया। खासकर अमिताभ के साथ आई फिल्मों ने उन्हें लोकप्रियता भी दिलाई और शिखर पर पहुंचाया। अमिताभ के साथ उनकी पहली फिल्म 1976 में आई 'दो अनजाने; थी। इसमें रेखा की अदाकारी से ज्यादा अमिताभ के साथ उनकी केमिस्ट्री को पसंद किया गया था। तभी से रेखा और अमिताभ का नाम जोड़कर देखा जाने लगा। दोनों ने कई हिट फ़िल्में साथ की। इनमें मुकद्दर का सिकंदर, खून पसीना, मिस्टर नटवरलाल, गंगा की सौगंध, राम बलराम और सुहाग आई। दोनों की फिल्मों का यह दौर 'सिलसिला' तक चला। अपने 50 साल के करियर में रेखा ने 180 से ज्यादा फिल्मों में काम किया। आज भी उनकी पुरानी फिल्मों को पसंद करने वालों की कमी नहीं है।

रेखा ने अपनी जिंदगी में बहुत से उतार-चढ़ाव देखे। बचपन में पिता का प्यार नसीब नहीं हुआ। रेखा के पिता जेमिनी गणेशन साउथ सिनेमा के सुपरस्टार थे, जिनका अभिनेत्री पुष्पवल्ली से अफेयर था। पुष्पावल्ली ने बिना शादी किए रेखा को जन्म दिया, इस वजह उन्हें बचपन में पिता के प्यार से वंचित रहना पड़ा। वे एक बिन ब्याही मां की संतान थीं। उन्होंने बहुत कम उम्र में तमिल और कन्नड़ फिल्मों में अभिनय करना शुरू कर दिया था। इसके बाद वे हिंदी फिल्म इंडस्ट्री में आ गई। रेखा का एक्टिंग करियर तो बहुत अच्छा रहा, पर निजी जिंदगी उतनी ही अस्त-व्यस्त रही। यहां तक कि उम्र के इस दौर में भी रेखा की प्रेम कहानियों के किस्से फिल्म इंडस्ट्री में चर्चित हैं। जीवन में कई रोमांस में उनका नाम जुड़ा, 3 शादियां की, फिर भी वे आज अकेली है। यदि उनके साथ कुछ है, तो अनसुलझे किस्से और कहानियां।

इसके अलावा अमिताभ बच्चन से उनके रिश्ते के गॉसिप। ऐसे कई किस्से उनके आसपास हैं, जिनके जवाब कभी बाहर नहीं आए। उनकी दुनिया में सिर्फ उनकी दोस्त, सेक्रेटरी और उनकी राजदां सिर्फ फरजाना ही है। आज भी लोग रेखा का नाम अमिताभ से जोड़कर देखते हैं, पर इसकी सच्चाई कोई नहीं जानता। यदि कोई जानता है तो सिर्फ फरजाना।

यह अभिनेत्री अपनी फिल्मों से ज्यादा अपनी प्रेम कहानियों की वजह से चर्चा में रही। अमिताभ उनकी जिंदगी में आने वाले पहले शख्स नहीं रहे, पर आखिरी जरूर। सबसे पहले रेखा का नाम जितेंद्र से जुड़ा था। लेकिन, जितेंद्र शादीशुदा थे, तो यह रिश्ता ज्यादा नहीं चला, पर चर्चा में जरूर आया। फिर चरित्र अभिनेता जीवन का एक्टर बेटा किरण कुमार और रेखा का रोमांस भी कुछ समय तक चला। इसके बाद रेखा की जिंदगी में आए उनके साथी कलाकार विनोद मेहरा। कहा तो यहां तक जाता है कि विनोद मेहरा और रेखा ने शादी कर ली थी। लेकिन, विनोद मेहरा की मां ने रेखा को स्वीकार नहीं किया। उनका नाम संजय दत्त के साथ भी लिया गया। दोनों जब फिल्म 'जमीन आसमान' में साथ काम कर रहे थे, तब उनके नाम जुड़े, पर संजय दत्त ने ऐसी बातों का खंडन किया था। अक्षय कुमार के साथ भी इस सदाबहार अभिनेत्री का नाम जुड़ा। लेकिन, अमिताभ बच्चन के साथ जब रेखा का नाम जुड़ा तो फिर वो कभी अलग नहीं हो सका। कहा जाता है, कि रेखा आज भी अपनी मांग में जो सिंदूर लगाती है, वो अमिताभ के नाम का ही है। फिल्म इंडस्ट्री ने रेखा को पहली बार सिंदूर लगाए हुए ऋषि कपूर और नीतू सिंह की शादी के रिसेप्शन में देखा था। लेकिन, 40 साल बाद भी अभी रेखा ने यह राज नहीं खोला कि उनकी मांग में लगे सिंदूर का कारण क्या है!

रेखा की जिंदगी में एक पड़ाव मुकेश अग्रवाल के नाम का भी आया। पर, हवा झोंके की तरह आया और चला गया। दिल्ली के इस कारोबारी से रेखा ने 1990 में बकायदा शादी की, पर ये साथ साल भर भी नहीं रहा। संदिग्ध स्थितियों में मुकेश अग्रवाल ने आत्महत्या कर ली। इस तरह इस रिश्ते का दर्दनाक अंत हुआ। आज भी यह राज ही है कि मुकेश अग्रवाल को किस वजह से जीवन से विरक्ति हुई! कहा जाता है कि रेखा को शादी के बाद पता चला था कि मुकेश को मानसिक बीमारी हैं। इसके बाद रेखा ने मुकेश से दूरी बना ली। एक दिन ऐसा भी आया, जब मुकेश अग्रवाल ने आत्महत्या कर ली। मुकेश के परिवार ने इसका दोषी रेखा को ही माना। फिल्म इंडस्ट्री में भी उन्हें 'वैम्प' मान लिया गया। यहां तक कहा गया कि रिश्तों को लेकर उनकी मनहूसियत मौत तक ले जाती है। पहले विनोद मेहरा और उसके बाद मुकेश अग्रवाल। लेकिन, रेखा ने सारे लांछनों को ख़ामोशी से झेल लिया।

रेखा के जीवन की एक अबूझ पहेली उनकी सेक्रेटरी फरज़ाना है। उनसे रेखा के संबंधों को हमेशा संदेह की नजर से देखा जाता रहा है। इसलिए कि 40 साल से ज्यादा समय से फरजाना जितनी रेखा से जुड़ी है, उतना कोई नहीं जुड़ा। वे हेयर ड्रेसर के रूप में रेखा के करीब आई थी, पर आज उनका साया हैं। इन दोनों के रिश्ते पर उंगलियां उठी, पर जवाब किसी के पास नहीं है। रेखा पर 2016 में सामने आई यासिर उस्मान की किताब में भी दावा किया था कि फरजाना को ही रेखा के बेडरूम तक जाने की इजाजत है। इसमें उनकी निजी जिंदगी, रोमांस और शादी को लेकर कई अनसुनी बातें लिखी गई थी। वक़्त के साथ दोनों का रिश्ता गहराता गया। रेखा ने उन्हें 1986 में हेयर ड्रेसर से सेक्रेटरी बना लिया। आज भी अगर किसी को रेखा से मिलना है, तो उसे पहले फरजाना से मिलना पड़ता है। यासिर उस्मान की लिखी रेखा की बायोग्राफी में तो यह भी दर्ज है कि वे अपनी सेक्रेटरी के साथ लिव-इन में रहती हैं। दोनों के रिश्ते पर कई बार सवाल उठ चुके हैं। मुकेश अग्रवाल की भाभी ने तो दोनों के रिश्ते को लेकर यह कह दिया था कि इनका रिश्ता पति पत्नी जैसा है। कहा जाता है कि मुकेश अग्रवाल यदि फरजाना के बारे में रेखा से कुछ कहते थे, तो रेखा नाराज हो जाती थी। यह रिश्ता आज भी सवालों के घेरे में है। रेखा नजदीक से जानने वालों का तो यह भी कहना है कि फरज़ाना का पहनावा कुछ ख़ास तरह है, अमिताभ की तरह का है। क्या इसलिए कि रेखा को हमेशा अमिताभ के अपने आसपास होने का भ्रम बना रहे!

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

जी-समूह रतन टाटा की जिंदगी पर फिल्म बनाएगा

मशहूर उद्योगपति रतन टाटा का कुछ दिन पहले निधन हो गया। उन्होंने 86 वर्ष की उम्र में दुनिया को अलविदा कहा। टाटा समूह के चेयरमैन ब्लड प्रेशर समेत कई समस्याओं से जूझ रहे थे। रतन टाटा के निधन से पूरा भारत शोक में है। सुभाष चंद्रा ने रतन टाटा की जिंदगी पर एक बायोग्राफिकल फिल्म बनाने का ऐलान किया। उन्होंने कहा कि 'जी ग्रुप ने निर्णय लिया है कि उन पर, उनके जीवन के ऊपर एक बायोग्राफिकल फिल्म बनाई जाएगी, जो कि जी-5 पर तो चलेगी ही, बाकी जी के जितनी भी भाषाओं के नेटवर्क हैं। उन सभी भाषाओं में फिल्म बनेगी। पूरे देश और दुनिया को वियोन के माध्यम से वह फिल्म दिखाई जाएगी।

बिजनेस टायकून को भारत रत्न सम्मान दिलवाने की भी अपील की जा रही है। देश की बड़ी-बड़ी हस्तियां

रतन टाटा को श्रद्धांजलि दे रही हैं। अब जी-समूह के संस्थापक सुभाष चंद्रा ने रतन टाटा के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया और रतन टाटा को भावभीनी श्रद्धांजलि दी। जी-समूह के संस्थापक सुभाष चंद्रा ने रतन टाटा के निधन पर अपना दुख व्यक्त किया।

उन्होंने रतन टाटा संग अपने रिश्तों को लेकर कहा कि बहुत लोगों को यह मालूम नहीं है कि एक मीडिया का प्रमोटर होने के नाते, वह मुझसे बहुत आशाएं रखते थे और कहते भी थे। इस वजह से कुछ विषयों पर वे मुझसे सलाह भी करते थे। मैं भी कुछ चीजों पर उनसे सलाह लेता था। वे बड़े ही बेबाक किस्म के व्यक्ति थे। उनको जो चीज जंची, ठीक लगी तो हां कहते थे, नहीं तो ना भी कहते। कभी-कभी वे डांट भी देते थे। उनकी इस तरह की पर्सनालिटी थी। उन्हें सच्चा मित्र कह सकते हैं। क्योंकि, सच्चा मित्र ही आपको डांट सकता है। मेरा उनसे इसी तरह का बॉन्ड था।

तलाक के बाद करियर पर फोकस करेंगी उर्मिला

लंबे समय से लाइम लाइट रही उर्मिला मातोंडकर अचानक की खबरों में आ गई। शादी के बाद उर्मिला मातोंडकर बॉलीवुड से जैसे गायब ही हो गई थीं। शादी के 8 साल बाद उर्मिला मातोंडकर ने एक बार फिर से सुर्खियां बटोरनी शुरू कर दी। खबर है कि उर्मिला मातोंडकर की पर्सनल लाइफ में सब कुछ ठीक नहीं चल रहा, जिसके चलते उन्होंने तलाक लेने का फैसला किया है। कुछ समय पहले ही उर्मिला मातोंडकर और उनके पति मोहसिन अख्तर मीर ने कोर्ट में तलाक की अर्जी दी है। इस खबर ने उर्मिला मातोंडकर के फैंस को सकते में डाल दिया है। लोग समझने की कोशिश कर रहे हैं कि शादी के 8 साल बाद ऐसा भी क्या हो गया

जो उर्मिला मातोंडकर को अपनी शादी ही तोड़ने की नौबत आ गई। उर्मिला मातोंडकर ने चार महीने पहले कोर्ट में तलाक की अर्जी दी थी। वहीं एक रिपोर्ट में कहा जा रहा है कि उर्मिला मातोंडकर और मोहसिन अख्तर मीर का तलाक आपसी रजामंदी में नहीं हो रहा है। मोहसिन अख्तर मीर तलाक के लिए तैयार नहीं हैं। शादी के बाद उर्मिला मातोंडकर ने राजनीति में भी कदम जमाने की कोशिश की थी। हालांकि चुनाव हार जाने के बाद उर्मिला मातोंडकर ने राजनीति से भी दूरी बना ली। खबर है कि उर्मिला मातोंडकर अब अपने बॉलीवुड करियर पर फिर से फोकस करने वाली हैं।

बताया जा रहा है कि उर्मिला मातोंडकर ने काफी सोच समझ कर अपनी शादी को तोड़ने का फैसला किया है। धर्म की दीवार को गिराते हुए उर्मिला मातोंडकर ने साल 2016 में जाने माने बिजनेसमैन और मॉडल मोहसिन अख्तर मीर के साथ शादी की थी। उर्मिला मातोंडकर के इस फैसले ने सबको चौंका दिया था।

सिनेमा ने बदल दिया 'करवा चौथ' का रूप

अशोक जोशी

करवा चौथ को कुछ साल पहले तक सामान्य व्रत की तरह किया जाता था। लेकिन, जब हिन्दी फिल्मों में करवा चौथ को बड़े परदे पर दिखाना शुरू किया, तभी से परिवारों में मनाए जाने इस पर्व में भव्यता के

दर्शन होने लगे। करवा चौथ को लोकप्रिय बनाने में हिंदी सिनेमा का बहुत बड़ा योगदान है। 80 के दशक से फिल्मों में करवा चौथ का चलन लोकप्रिय होने लगा, जिसका आम महिलाओं पर भी इतना प्रभाव पड़ा कि वे भी बिल्कुल फिल्मी बन गईं। समाज का एक अनकहा सा दबाव फैशन में तब्दील हो गया।

हिंदी फिल्मों ने करवा चौथ को ग्लैमरस, फैशनेबल और फेमस बना दिया। आज भी महिलाएं इस व्रत को रखती हैं, लेकिन अंदाज बदल गया। पूरा दिन भूखा रहने के बावजूद उनके चेहरे पर गजब का उत्साह देखने को मिलता है। पतिव्रता का ठप्पा लगाए सजी-संवरी पति की लंबी उम्र की दुआ मांगती हैं। साथ ही वे सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने में गर्व महसूस करती हैं। कुछ ऐसी फिल्में हैं, जिसमें करवा चौथ के व्रत को बढ़ा-चढ़ाकर परदे पर पेश किया गया। इसका असर यह हुआ कि अब तक इस व्रत से अनजान पुरुष पर भी फिल्मी करवा चौथ के रंग में रंगे नजर आने लगे।

सिनेमा में सबसे पहले फिल्म 'बहू बेटी' में करवा चौथ का व्रत दिखाया गया था। इस फिल्म का गाना 'करवा चौथ का व्रत ऐसा' सबसे पहला ऐसा गाना है जो माला सिन्हा और मुमताज पर फिल्माया गया था। बीते जमाने की श्वेत श्याम बहू बेटी के इस गाने में सभी महिलाएं गाती.बजाती.झूमती और अपने पति की लंबी उम्र की दुआ मांगती नज़र आती है। 90 के दशक में शाहरुख खान और काजोल की फिल्म 'दिलवाले दुल्हनिया ले जाएंगे' ने करवा चौथ का स्वरूप ही बदल दिया। फिल्म में करवा चौथ प्रसंग में काजोल इस व्रत को रखने के दौरान बेहोश होने का नाटक करती है और अपने प्रेमी शाहरुख खान के हाथ से पानी पीती है। व्रत की पूजा के बाद दोनों एक दूसरे को प्यार से खाना भी खिलाते हैं। राज और सिमरन का ये सीन आज भी याद किया जाता है। इसके साथ ही इस अवसर पर फिल्माया गया गीत 'घर आजा परदेसी' आज भी करवाचौथ पर सुनाई पड़ता है।

राजश्री फिल्म्स ने तो फिल्मों के माध्यम से शादी जैसे संस्कार को एक महोत्सव में बदलने का काम किया है। उनकी ही फिल्म 'हम आपके हैं कौन' में सलमान और माधुरी दीक्षित के करवा चौथ का सीक्वेंस बहुत ज्यादा रोमांचित करता है। इसकी भव्यता ने करवा चौथ को जो जगमगाहट दी, वह आज भी कायम है। इस परम्परा को करण जौहर ने भव्यता से आगे बढ़ाने का काम किया। फिल्म 'कभी खुशी कभी गम' में करवाचौथ का व्रत बड़े ही भव्य अंदाज में फिल्माया गया। इस सीन में तीन फिल्मी जोड़ियों को एक साथ व्रत रखते हुए दिखाया जाता है। अमिताभ-जया, शाहरुख-काजोल और ऋतिक-करीना पर करवा चौथ का दृश्य शूट किया गया। इस सीन में खास बात है कि इस व्रत में पूरे परिवार को साथ रखते हुए दिखाया गया है। साथ ही महल जैसे घर

में बैक ग्राउंड में काफी लोग झूमते नज़र आते हैं।

शाहरूख और ऋतिक रोशन का डांस भी देखने लायक है। 'हम दिल चुके सनम' में करवा चौथ के दृश्य को सलमान और ऐश्वर्या के साथ कलात्मक रूप से भव्यता देकर फिल्मांकित किया है। इस फिल्म के दौरान सलमान और ऐश्वर्या के बीच प्यार पनपा था। 'चांद छुपा बादल में' गीत में सलमान और ऐश्वर्या की केमिस्ट्री देखने लायक है। शायद यह पहली और अकेली ऐसी फिल्म होगी, जिसमें करवा चौथ को दो बार फिल्माया गया। पहली बार तब जब ऐश्वर्या सलमान से प्यार करती है, दूसरी बार जब वो अजय देवगन की पत्नी बन चुकी होती है।

अमिताभ और हेमा मालिनी अभिनीत फिल्म 'बाबुल' में इस फिल्म के करवा चौथ में दिलचस्प बात ये है कि इसमें लीड एक्टर्स अपनी अपनी पत्नियों के लिए व्रत रखते है। सलमान खान इस मौके अपने माता -पिता यानी हेमा मालिनी और अमिताभ बच्चन को एक खुशखबरी और देते हैं कि रानी मुखर्जी मां बनने वाली हैं। व्रत की खुशी दोगुनी हो जाती है और एक भावनात्मक पहलू भी सामने आता है। रानी अपने ऑनस्क्रीन पति सलमान खान को सात जन्मों तक पाने के लिए करवा चौथ का व्रत रखती है।

राजा हिंदुस्तानी में करवा चौथ का सीन काफी रोमांचक है। इसमें करिश्मा अपने पति के साथ मनमुटाव होने पर अपने मायके रहने के लिए चली जाती है। वहीं भीगी आंखों से अपने पति की लंबी उम्र के लिए व्रत रखती है। लेकिन, अजीब इत्तेफाक होता है कि आमिर खान का भी इसी दिन करिश्मा से टकराना हो जाता है। इश्क-विश्क में अमृता राव, शाहिद कपूर के लिए व्रत रखती हैं। हालांकि, शाहिद अपनी हीरोइन से फ्लर्ट कर रहे होते हैं। लेकिन, जब उनको ये पता चलता है कि अमृता ने करवा चौथ के लिए रखा है तो अचानक ही शाहिद के मन में अमृता के लिए भावनाएं उमड़ आती हैं। दोनों नोक-झोंक के साथ इस व्रत को पूरा करते हैं। इमरान हाशमी की फिल्म 'जहर' में किसी तीसरे को लेकर तनाव आ जाता है। लेकिन, निर्माता ने करवा चौथ के प्रसंग के माध्यम से दो प्यार करने वाले पति-पत्नी के बीच के जुड़ाव स्थापित करने का प्रसंग बनाकर करवा चौथ की प्रासंगिकता को बढाने का काम किया।

करवा चौथ के गुदगुदाने वाले दृश्यों के बीच रवि चौपडा निर्देशित 'बागबान' में करवा चौथ का मार्मिक फिल्मांकन आंखे नम कर जाता है। फिल्म में अमिताभ बच्चन और हेमा मालिनी अपने-अपने घर बच्चों के साथ अलग रहते हैं। हेमा मालिनी अपने पति अमिताभ के लिए करवा चौथ का व्रत रखती हैं। लेकिन, दूर होने की वजह से अमिताभ से फोन पर ही बात करते हुए करवा चौथ का व्रत पूरा करती हैं। इस दृश्य में एक दूसरे के लिए प्यार और स्नेह बस देखते ही बनता है। पति-पत्नी का एक ऐसा रिश्ता जिसे किसी भी और चीज की दरकार नहीं होती। इस सीन में खुद अमिताभ भी हेमा के लिए व्रत रखते हैं और तब तक पानी नहीं पीते, जब तक चांद नहीं निकल आता। ये सुनते ही हेमा की आंखों में आंसू आ जाते हैं। यह सही है कि समय के साथ समाज में करवा चौथ का स्वरूप बदला है और इस बदलाव में हिंदी सिनेमा का बहुत बड़ा हाथ है।

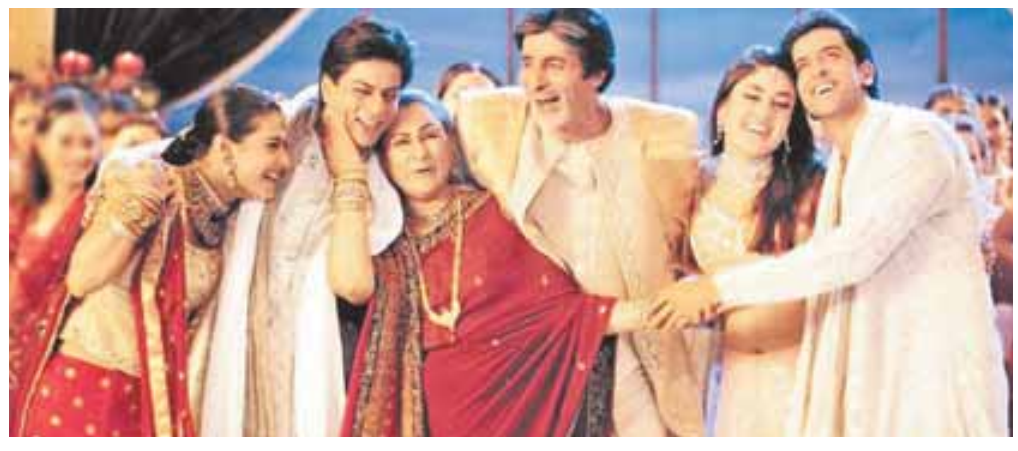

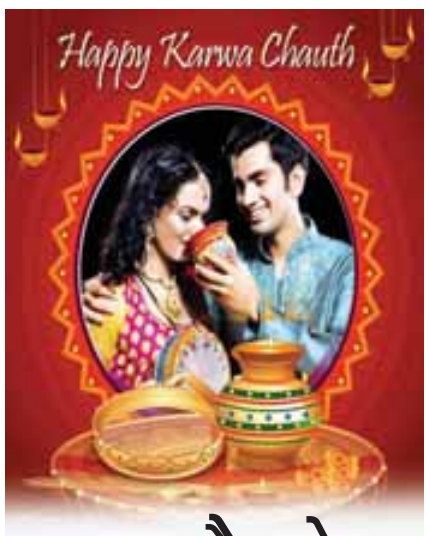

करवा चौथ के दिन इस मुहूर्त में करें सरगी

सुहागिन महिलाओं और अविवाहित लड़कियों के लिए करवा चौथ के पर्व का विशेष महत्व है। धार्मिक मान्यता है कि इस व्रत के पुण्य प्रताप से विवाहित महिलाओं को अखंड सुहाग की प्राप्ति होती है और पति की लंबी आयु होती है। इस दिन सरगी की परंपरा को निभाया जाता है। सरगी सास अपनी बहु को देती है। हिंदू पंचांग अनुसार, करवा चौथ का पर्व कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि पर मनाया जाता है। इस त्योहार का सुहागिन महिलाओं और अविवाहित लड़कियों को बेसब्री से इंतजार रहता है। इस व्रत को निर्जला किया जाता है। रात को चंद्र दर्शन करने के बाद व्रत का पारण किया जाता है। इस व्रत की शुरुआत सुबह सरगी से होती है। व्रत में सरगी का विशेष महत्व है।

सरगी में क्या शामिल करें?

करवा चौथ की सरगी में फलों को शामिल करना चाहिए। जैसे- सेब, केला, अंगूर, पपीता आदि। इसके अलावा सूखे मेवे, हलवा, मिठाई, दूध और दही समेत आदि चीजों को शामिल किया जा सकता है।

सरगी 2024 शुभ मुहूर्त

इस बार करवा चौथ का व्रत 20 अक्टूबर को किया जाएगा। इस दिन सूर्योदय से पहले सरगी की परंपरा निभाई जाती है। इस दिन सूर्योदय से 02 घंटे पहले सरगी में शामिल चीजों का सेवन सेवन कर लें। 20 अक्टूबर को सूर्योदय सुबह 06 बजकर 25 मिनट पर होगा। ऐसे में करवा चौथ के दिन सुबह 04 बजकर 25 मिनट तक सरगी में शामिल विभिन्न चीजों का सेवन कर लें।

सरगी का महत्व

करवा चौथ के दिन सरगी की थाली में शामिल चीजों का सेवन ब्रह्म मुहूर्त में करना चाहिए। मान्यता है कि इस समय देवी-देवता पृथ्वी लोक पर विचरण करते हैं, जिसकी वजह से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इस दौरान जो चीज हम खाते हैं, तो वह हमारे अंदर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह करती हैं।

करवा चौथ शुभ मुहूर्त

पंचांग के अनुसार, कार्तिक माह की कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि की शुरुआत 19 अक्टूबर को शाम 06 बजकर 16 मिनट पर होगी। वहीं, इसका समापन 20 अक्टूबर को दोपहर 03 बजकर 46 मिनट पर होगा। ऐसे में करवा चौथ का व्रत 19 अक्टूबर को किया जाएगा। इस दिन शुभ मुहूर्त कुछ इस प्रकार रहने वाले हैं -

करवा चौथ पूजा मुहूर्त - शाम 05 बजकर 47 मिनट से 07 बजकर 04 मिनट तक
करवा चौथ व्रत समय - सुबह 06 बजकर 34 मिनट से शाम 07 बजकर 22 मिनट पर

मधुर प्यार और अखंड सुहाग का मंगल पर्व- करवा चौथ

पति की दीर्घायु और मंगल-कामना हेतु सुहागिन नारियों का यह महान पर्व है। करवा (जल पात्र) द्वारा कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को चन्द्रमा को अर्घ्य देकर पारण (उपवास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी को चन्द्रमा को अर्घ्य देकर पारण उपवास के बाद का पहला भोजन) करने का विधान होने से इसका नाम करवा चौथ है।

करवा चौथ और करक चतुर्थी पर्याय है। चन्द्रोदय तक निर्जल उपवास रखकर पुण्य संचय करना इस पर्व की विधि है। चन्द्र दर्शनोपरांत सास या परिवार में ज्येष्ठ श्रद्धेय नारी को बायना देकर 'सदा सौभाग्यवती भव' का आशीर्वाद लेना व्रत की पहचान है। सुहागिन नारी का पर्व होने के नाते यथासंभव और यथाशक्ति न्यूनाधिक सोलह श्रृंगार से अलंकृत होकर सुहागिन अपने अंत:करण के उल्लास को प्रकट करती है। पति चाहे जैसा हो पर पत्नी इस पर्व को मनाएगी अवश्य। पत्नी का पति के प्रति यह समर्पण दूसरे किसी धर्म या संस्कृति में कहां? पुण्य प्राप्ति के लिए किसी पुण्यतिथि में उपवास करने या किसी उपवास के कर्मानुष्ठान द्वारा पुण्य-संचय करने के संकल्प को व्रत कहते हैं। व्रत और उपवास द्वारा शरीर को तपाना तप है। व्रत धारण कर, उपवास रखकर पति की मंगल कामना सुहागिन का तप है। तप द्वारा सिद्धि प्राप्त करना पुण्य का मार्ग है इसीलिए सुहागिन करवा चौथ का व्रत धारण कर उपवास रखती है।

ब्रह्म मुहूर्त से चन्द्रोदय तक जल-भोजन कुछ भी ग्रहण न करना करवा चौथ का मूल विधान है। वस्तुत: भारतीय पर्वों में विविधता का इन्द्रधनुषीय सौंदर्य है। इस पर्व के मनाने, व्रत रखने, उपवास करने में मायके से खाद्य पदार्थ भेजने, न भेजने आदि की रूढ़िवादी परंपराएं अलग-अलग क्षेत्रों में भिन्नता के साथ प्रचलित हैं।

बायना देने-लेने, करवे का आदान-प्रदान करने, बुजुर्ग महिला से आशीर्वाद लेने-देने की सारी मान्यताएं अलग-अलग क्षेत्रों, जातियों/वर्णों में भले ही भिन्न हों, परंतु सभी का उद्देश्य एक ही है और वह है- पति का मंगल। पश्चिमी सभ्यता में निष्ठा रखने वाली सुहागिनों के लिए यह पर्व एक मार्गदर्शिका है। एक निर्देशिका है। वस्तुत: हिन्दू संस्कृति आदर्शों व श्रेष्ठताओं से परिपूर्ण एक ऐसी संस्कृति है? जिसमें पारलौकिकता व आध्यात्मिकता की महत्ता है। चूंकि हिन्दू संस्कृति में पति-पत्नी का संबंध 7 जन्मों का होता है इसीलिए व्रत-उपवास, पूजन-अर्चन इस जन्म-जन्मांतर के संबंध को प्रगाढ़ बनाते हैं। करवा चौथ व्रत पालन के महत्व के बारे में कुछ इस प्रकार से अभिव्यक्ति दी गई है-

व्रतेन दीक्षामाप्नोति
दीक्षायाप्नोति दक्षिणाम।
दक्षिणा श्रद्धामाप्नोति
श्रद्धया सत्यमाप्यते।

अर्थात व्रत से दीक्षा प्राप्त होती है। दीक्षा से दक्षिणा प्राप्त होती है। दक्षिणा से श्रद्धा प्राप्त होती है। श्रद्धा से सत्य की प्राप्ति होती है।। वस्तुत: पति अपनी पत्नी की श्रद्धा व आस्था देखकर कुछ इस तरह से अभिभूत हो जाता है कि वह पत्नी व बच्चों के प्रति उत्तरदायित्व निर्वाह के लिए कहीं अधिक संकल्पवान व निष्ठावान हो जाता है। हर सुहागिन अन्न-जल का परित्याग कर चांद की छवि दर्पण में देखकर और फिर अपने पति का मुखड़ा देखकर ईश्वर से यही मनौती मांगती है कि दीपक मेरे सुहाग का जलता रहे। कभी चांद तो कभी सूरज बनकर निकलता रहे। हर भारतीय नारी अपनी सांस्कृतिक मान्यताओं, आदर्शों व परंपराओं पर गर्व करती है। करवा चौथ पर हर सुहागिन का हृदय अपने पति के लिए लंबी उम्र की दुआ मांगने लगता है।

किन महिलाओं को नहीं रखना चाहिए करवा चौथ का व्रत?

करवा चौथ हिंदू धर्म का एक महत्वपूर्ण पर्व है। इस दिन सुहागिन महिलाएं अपने पति की लंबी आयु, अच्छे स्वास्थ्य और सुखी वैवाहिक जीवन के लिए निर्जला उपवास रखती हैं। महिलाएं इस दिन शाम को चंद्रमा को अर्घ्य देने के बाद ही अपना व्रत खोलती हैं। हर साल कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को करवा चौथ का त्योहार मनाया जाता है। हिंदू पंचांग के अनुसार इस साल 20 अक्तूबर 2024 को करवा चौथ का व्रत रखा जाएगा। इस व्रत को करते समय कई नियमों का पालन करना जरूरी होता है। हालांकि यह व्रत सभी महिलाओं को करना चाहिए, लेकिन कुछ स्थितियों में स्त्रियों को यह व्रत नहीं करना चाहिए। ऐसे में आइए जानते हैं किन महिलाओं को करवा चौथ का व्रत नहीं करना चाहिए।

गर्भवती महिलाएं

करवा चौथ के पर्व हर सुहागिन महिला के लिए बहुत महत्व रखता है, लेकिन गर्भावस्था के दौरान शरीर को अधिक पोषण की जरूरत होती है। वहीं करवा चौथ के व्रत में पूरे दिन कुछ भी खाना या पीना वर्जित होता है। ऐसे में गर्भवती महिलाओं को करवा चौथ का व्रत नहीं करने की सलाह दी जाती है। गर्भावस्था में भूखे रहना बच्चे के लिए नुकसानदायक हो सकता है, इसलिए ऐसे में महिलाओं को करवा चौथ का व्रत नहीं रखना चाहिए।

कुंवारी लड़कियां

करवा चौथ सुहाग का पर्व है। शास्त्रों के अनुसार, इस व्रत को केवल सुहागिनों को ही रखना चाहिए। यह व्रत पति की लंबी उम्र के लिए रखा जाता है। इसलिए कुंवारी लड़कियों को करवा चौथ का व्रत नहीं रखना चाहिए।

मासिक धर्म के दौरान

मासिक धर्म के दौरान महिलाओं को कोई भी पूजा-पाठ नहीं करनी चाहिए। इस दौरान महिलाओं को अपनी सेहत का ध्यान रखना चाहिए। हालांकि इस दौरान महिलाएं करवा चौथ का व्रत रख सकती हैं, लेकिन पूजा नहीं करनी चाहिए।

कमजोर या अस्वस्थ महिलाएं

अगर कोई महिला किसी तरह की बीमारी से ग्रस्त है या कमजोर है। ऐसी स्थिति में भी महिलाओं को करवा चौथ का व्रत नहीं रखना चाहिए। ऐसे में महिलाओं को अपनी सेहत का खास ध्यान रखना चाहिए।

करवा चौथ पर 21 मिनट तक रहेगी भद्रा, इस दौरान सुहागिनें न करें ये काम

करवा चौथ हिंदू धर्म के सबसे महत्वपूर्ण त्योहारों में से एक है और कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी के दिन मनाया जाता है। इस वर्ष, करवा चौथ लगभग 20 अक्तूबर, 2024 को मनाया जाएगा। इस दिन, विवाहित महिलाएं अपने पति की लंबी उम्र और सुखी वैवाहिक जीवन को बनाए रखने के लिए निर्जला व्रत रखती हैं जिसका पारण चांद निकलने पर किया जाता है।

करवा व्रत की शुरुआत हमेशा सरगी खाने से होती है, जो सूर्योदय से करीब दो घंटे पहले खाई जाती है। इस दौरान करवा माता, भगवान गणेश और चंद्रमा की विधिपूर्वक पूजा की जाती है। इस साल करवा चौथ पर भी भद्रा का साया रहेगा। ऐसे में आइए जानते हैं इस दौरान सुहागिनों को किस प्रकार के कार्य करने से बचना चाहिए।

भद्रा लगने का समय

ज्योतिष शास्त्र में भद्रा को शुभ माना गया है। कहा जाता है कि भद्रा शुभ कार्यों में बाधा उत्पन्न करती है। इस वर्ष करवा चौथ पर 20 अक्तूबर को 21 मिनट तक भद्रा का साया रहेगा। करवा चौथ के दिन पूजा का शुभ समय 20 अक्तूबर 2024 को शाम 5.46 बजे से शुरू हो रहा है। यह शुभ मुहूर्त 19.02 तक रहेगी। करवा चौथ के दिन भद्रा सुबह 06.24 से 06.46 तक रहती है। करवा चौथ व्रत की शुरुआत भद्रा काल शुरू होने से पूर्व ही हो जाएगी। ऐसे में व्रती सूर्योदय से पहले स्नान कर सरगी ग्रहण कर लें और व्रत का संकल्प ले लें।

करवा चौथ व्रत के दौरान न करें ये काम

- करवा चौथ व्रत वाले दिन सुहागिनें अपने श्रृंगार में सफेद और काले रंग की वस्तु का प्रयोग न करें। सुहागिन महिलाएं यदि करवा चौथ पर इन रंगों का उपयोग करती हैं तो उनके जीवन में नकारात्मक ऊर्जा का प्रभाव बढ़ सकता है।
- भद्रा काल के दौरान कोई संपत्ति या व्यापार की शुरुआत या निवेश न करें।
- करवा चौथ पर पूजा के बाद जब भी कोई श्रृंगार की वस्तु बच जाती हैं, तो उसे इधर उधर न फेंकें, बल्कि उसे किसी पवित्र नदी में प्रवाहित करें।
- इस दिन धारदार चीजों के इस्तेमाल से बचें। साथ ही किसी से कोई भी मनमुटाव न रखें और अपशब्द न कहें।
- व्रत पारण करने के बाद तामसिक भोजन ग्रहण न करें।

महिलाएं करें ये काम

हालांकि करवा चौथ की पूजा के समय भद्रा नहीं है फिर भी यदि महिलाओं को भद्रा का भय सता रहा है वो नीचे दिए गए मंत्र का जाप कर सकती हैं।

धन्या दधमुखी भद्रा महामारी खरानना।
कालारात्रिर्महारुद्रा विष्टिश्च कुल पुत्रिका।
भैरवी च महाकाली असुराणां क्षयन्करी।
द्वादश्चैव तु नामानि प्रातरुत्थाय य: पठेत।
न च व्याधिर्भवैत तस्य रोगी रोगात्प्रमुच्यते।
गृह्य: सर्वेनुकूला- स्यर्नु च विघ्नादि जायते।

इस मंत्र के जाप से भद्रा का भय कम होता है और वैवाहिक जीवन में आने वाली बाधाएं खत्म होती हैं।

पहली बार रखना है करवा चौथ व्रत? नोट कर लें पूजा सामग्री, पूजन मंत्र, कोई न रहे कमी

करवा चौथ का व्रत कार्तिक माह के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी तिथि को रखा जाता है. यह व्रत अखंड सौभाग्य के लिए रखा जाता है. इस दिन पत्नी अपने पति की लंबी आयु और सुख दांपत्य जीवन के लिए निर्जला व्रत रखती है.

जिन युवतियों का विवाह तय हो गया है, वे भी करवा चौथ का व्रत रख सकती हैं. इस व्रत में करवा माता, विघ्नहर्ता श्री गणेश, भगवान शिव और चंद्रमा की पूजा करने का महत्व है. यह व्रत चतुर्थी के सूर्योदय से लेकर चंद्रोदय तक रखा जाता है. चांद के निकलने का बाद पारण करके व्रत को पूरा करते हैं.

जिन युवतियों को पहली बार करवा चौथ का व्रत रखना है, उनको पूजा सामग्री और मंत्र के बारे में जानना चाहिए.

करवा चौथ 2024 पूजा सामग्री

- करवा माता और गणेश जी की तस्वीर या मूर्ति
- करवा माता के लिए चुनरी, नए कपड़े, गणेश जी और शंकर जी के लिए नए वस्त्र
- मिट्टी का करवा, एक ढक्कन, एक थाली
- चांद देखने के लिए एक छलनी, लकड़ी की एक चौकी
- सोलह श्रृंगार की समाग्री, एक कलश, दीपक, रूई की बाती
- कपूर, अगरबत्ती, गेहूं, लहुआ, 8 पूड़ियों की अठावरी
- अक्षत, हल्दी, चंदन, फूल, पान का पत्ता, कच्चा दूध, दही
- शक्कर का बूरा, शहद, गाय का घी, रोली, कुमकुम
- मौली या रक्षासूत्र, मिठाई, एक लोटा या गिलास, दक्षिणा
- करवा चौथ व्रत कथा और आरती की एक पुस्तक

करवा चौथ 2024 पूजा मंत्र

करवा चौथ में माता पार्वती, विघ्नहर्ता गणेश और शिव जी की पूजा का विधान है, इसलिए उनके ही मंत्रों का उपयोग पूजन में होता है.

- मां पार्वती की पूजा का मंत्र - देहि सौभाग्य आरोग्यं देहि मे परम् सुखम। सन्तान देहि धनं देहि सर्वकामांश्च देहि मे।।
- गणेश पूजा मंत्र - वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभ। निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा॥
- शिव पूजा मंत्र - ओम नम: शिवाय
- करवा चौथ 2024 चंद्रमा को अर्घ्य देने का मंत्र
- करवा चौथ को चंद्रोदय होने पर चंद्रमा की पूजा करते हैं. चंद्रमा को कच्चा दूध, गंगाजल, अक्षत, फूल आदि से अर्घ्य देते हैं. इसके लिए आपको अर्घ्य देने के मंत्र का उच्चारण करते हैं.

गगनार्णवमाणिक्य चन्द्र दाक्षायणीपते।
गृहाणार्घ्यं मया दत्तं गणेशप्रतिरूपक॥